SAPTHAGIRI (HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:54, Issue: 05
OCTOBER-2023, Price Rs.20/-.
No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

# सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

अक्तूबर-2023

रु.20/-

## तिरुमल
## श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का नवरात्रि ब्रह्मोत्सव
## 2023 अक्तूबर 15 से 23 तक

# तिरुचानूर श्री पद्मावती देवी का ब्रह्मोत्सव

## 2023 नवम्बर 10 से 18 तक

**10-11-2023 शुक्रवार**
दिन - तिरुच्चि उत्सव, ध्वजारोहण
रात - लघुशेषवाहन

**11-11-2023 शनिवार**
दिन - महाशेषवाहन
रात - हंसवाहन

**12-11-2023 रविवार**
दिन - मोतीवितानवाहन
रात - सिंहवाहन

**13-11-2023 सोमवार**
दिन - कल्पवृक्षवाहन
रात - हनुमंतवाहन

**14-11-2023 मंगलवार**
दिन - पालकी उत्सव, सा - वसंतोत्सव
रात - गजवाहन

**15-11-2023 बुधवार**
दिन - सर्वभूपालवाहन,
सा - स्वर्ण रथोत्सव
रात - गरुडवाहन

**16-11-2023 गुरुवार**
दिन - सूर्यप्रभावाहन
रात - चंद्रप्रभावाहन

**17-11-2023 शुक्रवार**
दिन - रथ-यात्रा
रात - अश्ववाहन

**18-11-2023 शनिवार**
दिन - चक्रस्नान, पंचमीतीर्थ
रात - तिरुच्चि उत्सव,
ध्वजावरोहण

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः
पृच्छामि त्वां धर्मसम्मूढचेताः।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्॥

*(- श्रीमद्भगवद्गीता - सांख्ययोग २.७)*

कायरतारूप दोष से उपहत हुए स्वभाववाला तथा धर्म के विषय में मोहितचित्त हुआ मैं आप से पूछता हूँ कि जो साधन निश्चित कल्याणकारक हो, वह मेरे लिये कहिये, क्योंकि मैं आपका शिष्य हूँ, इसलिये आपकी शरण हुए मुझ को शिक्षा दीजिए।

शतपुस्तक दानं च गीतायाः प्रकरोति यः।
स याति ब्रह्म सदनं पुनरावृत्ति दुर्लभम्॥

(- गीता मकरंद, गीता की महिमा)

एक सौ गीता ग्रन्थों का दान करने वाला पुनरावृत्तिरहित ब्रह्मधाम को प्राप्त होगा।

# सप्तगिरि पाठकों के लिए सूचना

**'सप्तगिरि' एक आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका है। सप्तगिरि के लिए आपका प्रेम अद्वितीय और असाधारण है। 'सप्तगिरि' ति.ति.दे. के और पाठकों के बीच एक पुल के जैसा काम कर रही हैं।**

**सप्तगिरि पत्रिका के दाम में परिवर्तन हुआ है।**

**स्वामी के आगमन की अनुभूति अपने ही घर में पाइए।**

**सप्तगिरि आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका के लिए चंदा भर कर...**

**श्रीहरि का अक्षर प्रसाद हर महीने स्वीकार कीजिए।**

# सप्तगिरि

## आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

(हिन्दी, तमिल, कन्नड, तेलुगु, अंग्रेजी और संस्कृत भाषाओं में प्रकाशित हो रही है।)

## चंदा का विवरण

एक प्रति - रु.20/-

वार्षिक चंदा - रु.240/-

जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) - रु.2,400/-

विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा - रु.1,030/-

दाम में परिवर्तन सितंबर - 2022 महीने से लागू हो गया है।

नये चंदादार पर ही ये परिवर्तन लागू होगा।

अन्य विवरण के लिए कृपया संपर्क करें -
प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे. प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति - 517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।
दूरभाषा - 0877-2264363, 2264543.

# सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की
आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति॥

वर्ष-५४ अक्तूबर-२०२३ अंक-०५

## विषयसूची


| | | |
|---|---|---|
| ब्रह्मोत्सव वैभव | डॉ.बी.के.माधवी | 07 |
| देवी-नवरात्रियों की शोभा | श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण | 16 |
| सुंदर बजरंगबली - हनुमद्वाहन वैभव | डॉ.एम.लक्ष्मणाचार्य | 24 |
| 'गोमाता' की सेवा में तिरुमल तिरुपति देवस्थान | श्रीमती सुधा रंगराजन | 31 |
| आल्वार तिरुनगरी वैभव श्री शठकोप स्वामीजी का इतिहास और महानता | श्री चंद्रकांत घनश्याम. लाहोटी | 34 |
| तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी) | प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव, प्रो.गोपाल शर्मा | 38 |
| श्री वेंकटाचल की महिमा | आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी | 42 |
| सीताफल के आरोग्य में लाभ | डॉ.सुमा जोषि | 45 |
| अक्तूबर महीने का राशिफल | डॉ.केशव मिश्र | 47 |
| नीतिकथा - बुद्धि का बल | श्रीमती प्रेमा रामनाथन | 48 |
| चित्रकथा - जल दान का महत्व | डॉ.एम.रजनी | 50 |
| क्विज - 15 | | 52 |


website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - गरुडारूढ़ श्री मलयप्पस्वामी, तिरुमल।
चौथा कवर पृष्ठ - श्री पद्मावती देवी, तिरुचानूर।


*गौरव संपादक*
श्री ए.वी.धर्मारेड्डी, आई.डी.ई.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी(एफ.ए.सी), ति.ति.दे.

*प्रधान संपादक*
डॉ.के.राधारमण

*संपादक*
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

*उपसंपादक*
श्रीमती एन.मनोरमा

*मुद्रक*
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
पुस्तक बिक्री केंद्र & मुद्रणालय,
ति.ति.दे., तिरुपति।

*स्थिरचित्र*
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.



**सूचना**
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।
*- प्रधान संपादक*

संपादकीय

# ब्रह्मांड नायक के नवरात्रि ब्रह्मोत्सव

**मा**र्कण्डेय पुराण का उल्लेख है कि सभी जीवों में शक्ति का रूप समा रहता है। शंकर भाष्यम् का उल्लेख है कि शक्ति के बिना कोई कार्य असंभव है। यजुर्वेद का कथन है कि संसार भर में वह महाशक्ति भरपूर रहता है। हमारा सनातन धर्म का कथन है कि जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ सारे देवता निवास करते हैं। एक नारी ही माता के रूप में, पत्नी के रूप में और बहन के रूप में रहकर हमें सदा उत्तम मार्ग पर आगे चलने को सिखाती है। इस कारण हमारे पूर्वज नारी को देवता के रूप में आदर करते थे। हम तो जगज्ननी के रूप में, आदिपराशक्ति के रूप में धन-धान्य और संतान लक्ष्मी के रूप में नारी को देखते और सम्मान करते आ रहे हैं। आदिपराशक्ति दुर्गादेवी का स्थान त्रिमूर्तियों से भी ऊँचा और महत्वपूर्ण है। हम बडे विश्वास के साथ देवी की पूजा करते हैं। उसी माता को ही हम जगत् का मूल कारक मानकर उसका सम्मान करते हैं। देवी माता में ही सारे ब्रह्माण्ड और समस्त जीवराशि का संचालन करने का शक्ति है।

भगवान विष्णु ने प्रिय देवियों को अपनी वक्षःस्थल पर स्थान दिया है। वैसे ही भगवान शिव ने अपने शरीर के आधे भाग को अपनी पत्नी पार्वती को दिया। नारी पर हम जो आदर रखते हैं, उसे प्रकट करने के रूप में ऐसी मान्यता है कि नारी शक्ति के बिना नर शक्ति अधूरी रह जाती है। ऐसी महत्वपूर्ण नारी शक्ति को सम्मान करने के रूप में ही नवरात्रि का उत्सव मनाया जाता है। दुर्गादेवी तो सिर्फ धन-धान्य के लिए ही नहीं बल्कि सकलसौभाग्य के प्रतिरूप के रूप में बनी रहती है; दुःख और पीडा को जड से नष्ट करती है ऐसी महान दुर्गादेवी को हम सब इस नवरात्रि में नमन करेंगे। इस नवरात्रि पर्व पर इस कलियुग के प्रत्यक्ष भगवान श्री वेंकटेश्वर के ब्रह्मोत्सव वैभवोपेत ढंग से मनाया जाता है। ज्यादातर हर वर्ष श्रवणा नक्षत्र और नवरात्रि ये दोनों एक साथ आते हैं। इसलिए तब एक ही ब्रह्मोत्सव को मनाने की परिपाटी है। लेकिन इस वर्ष अधिक मास के कारण दो बार ब्रह्मोत्सव मनाये जाने वाले हैं। अन्नमय्या ने अपने कीर्तन में उल्लेख किया है कि ब्रह्मोत्सव का समय तो वर्षा ऋतु का काल है। वर्षा ऋतु होते हुए भी भगवान श्री वेंकटेश्वर की ब्रह्मोत्सव का दर्शन के लिए भक्तगण दूर-दूर से तिरुमल आते हैं। तमिल के संत कवि तिरुमौलिशै आल्वार ने भी अपने प्रबंध में उल्लेख किया है कि वे भी भगवान श्री वेंकटेश्वर के ऐसे महत्वपूर्ण ब्रह्मोत्सव के दर्शन के लिए बडे लालायित हैं। वेंकटम् का अर्थ है कि सभी पापों को दूर करने वाला। श्री वेंकटेश्वर के दर्शन में उनका वरद हस्त हमारे जीवन को समृद्ध करता और उनका कटि हस्त हमें दुःख से ऊपर उठाता है। ऐसा माना जाता है कि भगवान श्री वेंकटेश्वर के ब्रह्मोत्सव का प्रबंधन कार्य स्वयं भगवान ब्रह्म के पर्यवेक्षण में होता है।

उनके ब्रह्मोत्सव में भक्तजन करोडों की संख्या में आकर उनके दर्शन करते हैं। साथ ही साथ सारे देवगण, ऋषिगण, यक्ष, किन्नेर, गंधर्व, किंपुरुष, पेड-पौधे, फल-फूल, पंचभूत आदि देवी-देवताएँ इस उत्सव के दर्शन से आनंदित होते हैं। इस उत्सव के समय भगवान की विभिन्न वाहन सेवा दर्शन, वेदमंत्र गान सभी स्थानों में साज सजावट, फल-पुष्प के प्रदर्शन, तिरुमल में स्थित नादनीराजनम् मंडप में और तिरुपति में स्थित अन्नमाचार्य कलामंदिर और महति कलामंडप आदि स्थानों में संगीत, नाट्य प्रदर्शन, हरिकथा, भजन, आध्यात्मिक भाषण आदि अनेक प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम का संचालन होता है। इस प्रकार बडे वैभवपूर्ण रूप से भगवान श्री वेंकटेश्वर ब्रह्मोत्सव के अवसर पर कुछ वाहनों पर अकेले और कुछ वाहनों पर उभय देवेरियों सुशोभित होकर भक्तजनों को दर्शन देते हैं। आइये! इस सुअवसर पर इस युग के महान नायक भगवान श्री वेंकटेश्वर के दर्शन कर अपने जीवन को धन्य बनायेंगे।

**ॐ नमो वेंकटेशाय!**

# ब्रह्मोत्सव वैभव

डॉ.बी.के.माधवी

तिरुमल में स्थित श्री वेंकटेश्वर स्वामी को अनुनित्य उत्सव ही है। नित्य, पक्ष, मास, वार्षिक नाम से कई उत्सव अत्यंत वैभव के साथ मनाये जाते हैं। सभी उत्सवों में प्रत्येक रूप से वर्ष में एक बार आनेवाले उत्सव ब्रह्मोत्सव ही है। भक्तजन ब्रह्मोत्सवों में स्वामी की वाहनसेवाओं को देखकर आनंद परवश हो जाते हैं। ब्रह्मोत्सवों के उपलक्ष में देश के कोने-कोने के यहाँ से भक्तजन तिरुमल पहाड आते हैं। ब्रह्मोत्सवों के संपन्न होते ही फिर ऐसी ब्रह्मोत्सवों में स्वामी को देखने के लिए भक्तजन तरस जाते है। ऐसे तरसनेवालों के लिए इस वर्ष अधिक मास के कारण दो ब्रह्मोत्सवों का आयोजन किया जा रहा है। पहली ब्रह्मोत्सव को सालकट्ल ब्रह्मोत्सव, दूसरी ब्रह्मोत्सव को नवरात्रि ब्रह्मोत्सव कहते हैं।

दशरा में होने वाले ब्रह्मोत्सवों के जैसे ये भी नौ दिन मनाये जाते हैं। फिर भी इन दोनों ब्रह्मोत्सवों के बीच थोडा फरक दिखाई देता है। साधारण ब्रह्मोत्सवों में पहले दिन ध्वजारोहण किया जाता है। स्वामी के वाहन गरुड का चित्र के साथ पतंग को लहराना ही इस ध्वजारोहण का मुख्य उद्धेश्य है। ऐसे ध्वजस्तंभ पर चित्रित गरुड अपने स्वामी के ब्रह्मोत्सवों में भाग लेने के लिए तीन लोकों के सारे देवताओं का आह्वान करता है। लेकिन नवरात्रि ब्रह्मोत्सवों में इस ध्वजारोहण कार्यक्रम नहीं रहता। ध्वजारोहण के बदले स्वामी पहले दिन स्वर्ण तिरुच्चि में शोभा यात्रा के निकलते हैं। वैसे ही छठे दिन के शाम पुष्पक विमान में आरूढ़ होकर भक्तजनों को दर्शन देते हैं। आठवें दिन सुबह स्वर्ण रथ पर सुशोभित होते हैं।

तिरुमल पहाड को साक्षात् कलियुग वैकुंठ कहा जाता है। श्री वेंकटेश्वर स्वामी कलियुग के नाथ माने जाते हैं, जो सातों पहाडों के शिरोभाग शेषाचल पर्वत पर स्थित होकर भक्तजनों का उद्धार कर रहे हैं। भक्तजनों का विश्वास है

कि कलियुग के प्रत्यक्ष देवता श्री वेंकटेश्वर स्वामी के साथ सारे देवतागण, दिक्पालक, मुनियों आदि तिरुमल पुण्यक्षेत्र पर स्थित होकर भक्तजनों को कलिपुरुष के प्रभाव से रक्षा करते हुए उनकी अभीष्टियों की सिद्धि को प्राप्त करता है।

श्री वेंकटेश्वर स्वामी का तिरुमलगिरियों में निवास करने का मुख्य कारण धरती माता का उद्धार है यानि हिरण्याक्ष के द्वारा अपहृत पाताल ले जायी गयी पृथ्वी का उद्धार करने के लिए ही है। इसी के साथ पृथ्वी पर निवास करनेवाले ऋषि, मुनियों, मानव आदि की रक्षा हेतु वैनतेय को आजादी कि वे वैकुंठ से क्रीडाचल को धरती पर यथाशीघ्र पहुँचा दे। जहाँ गरुड ने श्रीनिवास भगवान के लिए निवास स्थान खोजा वही वेंकटाद्रि पर्वत है। कालि के जीवों पर कृपा दृष्टि फेरने के लिए महाविष्णु ने श्री वेंकटेश्वर स्वामी के रूप में अवतार धारण किया। भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी कई नामों से विख्यात हुए।

### ब्रह्मानुभूति ही उत्सव

नारायण शब्द वाच्य ही परब्रह्म है, उस ब्रह्म के परब्रह्म नारायण का अर्चावतार ही ब्रह्मोत्सव है। यह सृष्टिकर्ता ब्रह्म के द्वारा आरंभ हुआ है। इसलिए इसका नाम ब्रह्मोत्सव पडा है। ब्रह्मोत्सवों में वाहनों के जुलूस के आगे एक छोटा रथ आगे चलता है। उसी को ब्रह्मरथ कहते हैं। इस रथ में निराकार, निर्गुण स्वरूप से ब्रह्मदेव रहकर उत्सव कार्यक्रम का निर्वहण करते हैं।

ब्रह्मोत्सवों के पहले तिरुमल मंदिर में तिरुमंजन कार्यक्रम रहता है। आलय की शुद्धि ही 'तिरुमंजन' है। ब्रह्मोत्सव के पहले मंगलवार इस कार्यक्रम रहता है। इसी का नाम 'कोइल आल्वार तिरुमंजन' है। कोयिल माने मंदिर, आल्वार का अर्थ भक्त है। भक्त के हृदय में जिस प्रकार भगवान रहता है उसी प्रकार मंदिर के गर्भालय में भगवान रहता है। भक्त का हृदय और मंदिर की शुद्धि ये दोनों एक ही कार्यरूप है। इस तिरुमंजनम के द्वारा यह स्पष्ट होता है कि जिस प्रकार मंदिर की शुद्धि करते है। उसी प्रकार भक्त को भी अपने हृदय को भगवान वास करने के लिए शुद्धि की जरूरत है। मंदिर सुगंध परिमलों से भर जाता है।

### विश्वक्सेन की पर्यवेक्षण

स्वामी के सेनाधिपति विश्वक्सेन के पर्यवेक्षण में श्री वेंकटेश्वर स्वामी के ब्रह्मोत्सव अंकुरार्पण कार्यक्रम से आरंभ होता है। ब्रह्मोत्सवों के प्रारंभ के पहले दिन के रात मंदिर की नौरुती दिशा में निर्णीत पुनीत प्रदेश में भूमाता की पूजा करके मृत्तिका संग्रहण करके जुलूस निकालते हुए मंदिर पहुँचते हैं। इसी को मृत्तिका 'संग्रहणयात्रा' कहते हैं। ऐसे लाये गये मिट्टी को आनंदनिलय के मुख्य प्रांगण में बिछा दिया जाता है तथा उसमें अंकुर लगाकर बीज-वपन या अंकुरार्पण किया जाता है।

### वाहन सेवा

यह ब्रह्मोत्सवों में अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है। वाहनसेवा नित्य प्रातः - सायंकाल संपन्न होती है। तिरुमल ब्रह्मोत्सवों की समायत्तता में नव-कलश-पालिकाओं की आराधना, नैवेद्य, होम तथा चक्र की बलि, अर्चना आदि नित्य-कृत्य मनाये जाते हैं। तत्पश्चात् रोजाना श्री वेंकेटेश्वर स्वामी की वाहन-सेवाएँ अत्यंत वैभवपूर्ण ढंग से संपन्न होती है, जिन्हें देखकर भक्तों की दोनों आँखे धन्य हो जाती हैं। श्री मलयप्पस्वामी अपनी प्रियतम देवेरियों श्रीदेवी-भूदेवी के साथ एक-एक वाहन पर विराजमान होकर आनंदनिलय के चारों ओर की तिरुमाडावीथियों पर समस्त राज-साज के साथ घूमते हुए भक्तजनों पर अपने कृपा कटाक्ष प्रसरित करने के लिए निकलते हैं। इन उत्सवों में ब्रह्म ही नहीं आदिशेष, गरुड, हनुमंत, सूर्य, चंद्र सकलदेवतागण, मृगेन्द्र, गजेन्द्र, कल्पवृक्ष आदि देवतांश स्वरूप स्वामी के लिए वाहन रूप में सेवाएँ प्रदान करते हैं।

### महाशेषवाहन

पहले दिन के रात श्रीदेवी-भूदेवी समेत श्री मलयप्पस्वामी महाशेषवाहन पर आरूढ़ होकर भक्तजनों को दर्शन देते है।

वैकुंठ क्षीरसागर में आदिशेष भगवान श्रीमन्नारायण का शयन तल्प है। वही आदिशेष रामावतार में लक्ष्मण के रूप में, कृष्णावतार में बलराम के रूप में भगवान के साथ ही था। कलियुग में शेषाद्रि के रूप में श्री वेंकटेश्वर स्वामी का साथ नहीं छोडा। इसीलिए उत्सवों में शेष को प्राधान्यता देते हुए पहले दिन इस वाहन पर जुलूस निकलता है। आदिशेष विष्णु भगवान का वास, शय्या, आसन, पादुका, उत्तरीय, धूप, बारिष में रक्षा देने वाले छत्र, पदपीठ, सेवक, शरीरभेद के रूप में शेषतल्प पात्र बन गया है। हमारे शरीर में मूलाधार से लेकर सहस्रार तक सर्पाकार में रहे कुंडलिनी शक्ति को जागृत करने का बोध इस वाहन सेवा से होता है।

## दूसरे दिन - लघुशेष वाहन

शेषाद्रि निलय श्री वेंकटेश्वर स्वामी अकेले दूसरे दिन सुबह उत्सव में पाँच शेष का लघुशेष वाहन पर जुलूस निकलता है। इस वाहन सेवा के द्वारा यहीं दृष्टिगत होता है कि- कृष्णावतार में कृष्ण कालिंदी नदी में वासुकी के सिर पर नृत्य करके मथुरा वासियों को जिस प्रकार आनंदित

किया है, उस दृश्य को पुनरंकित करने के लिए भगवान साक्षात् हमारे सम्मुख आये हैं और यह भी कहा जाता है कि दुष्ट लोग जहाँ भी हो, भगवान जरूर उन्हें खोजकर दुष्ट को दंडन जरूर करता है।

## हंस वाहन

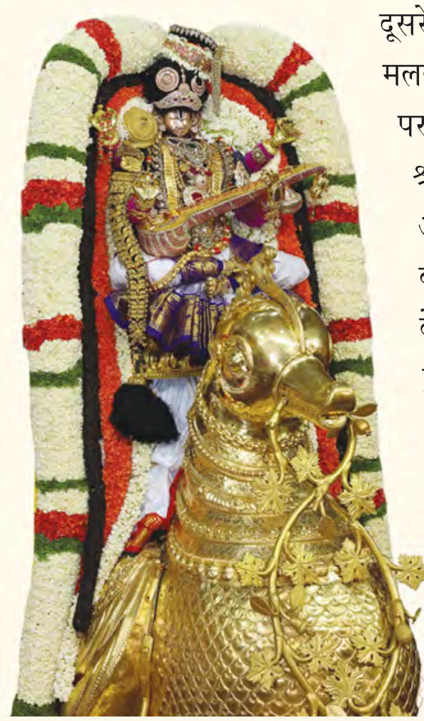

दूसरे दिन शाम को श्री मलयप्पस्वामी हंस वाहन पर जुलूस निकलता है। श्री मलयप्पस्वामी अकेले वीणापाणी बनकर, सरस्वती देवी के रूप में दिखाई देते हुए भक्तजनों को दर्शन देता है। हंस रूपी स्वच्छ मन हृदय को पाने के लिए भगवान से भक्तजन प्रार्थना करते हैं। भगवान

भी हंसवाहनारूढ़ होकर वाग्देवता सरस्वती के रूप में आत्मानात्म तत्व को भक्तजनों को बोध करता है।

## तीसरे दिन - सिंह वाहन

तीसरे दिन सुबह मलयप्पस्वामी अकेले सिंहवाहन पर जुलूस निकलता है। सिंह शक्ति और राजत्व का प्रतीक है। विष्णु भगवान सिंहमुख बनकर दुष्ट हिरण्यकशिप का संहार किया है। भक्त प्रह्लाद की रक्षा की है। योग शास्त्र में सिंहवाहन शक्ति का, गमन शक्ती का प्रतीक है। भगवद्गीता में स्वयं श्रीकृष्ण ने कहा कि सभी जानवरों में वह सिंह है। सिंहवाहन पर आरूढ़ होकर मलयप्पस्वामी भक्तजनों के हिंसा निवारण करने का अभय देता है। इस वाहन सेवा में मलयप्पस्वामी वज्रकिरीट और सर्वाभरणों से अलंकृत रहता है। ब्रह्मोत्सवों में श्री वेंकटेश्वरस्वामी का सिंहवाहनारूढ़ होकर जुलूस निकलना दुष्टजन संहार और भक्तजन की रक्षण का संकेत है।

## मोतीपालकी वाहन

तीसरे दिन शाम भगवान श्रीदेवी और भूदेवी के साथ मोतियों की पालकी में भोगश्रीनिवास के रूप में भक्तजनों को दर्शन देता हैं। मोती स्वच्छता का प्रतीक है। इस शोभा यात्रा के द्वारा भगवान सबको स्वच्छ बनाने आते है।

## चौथे दिन - कल्पवृक्ष वाहन

चौथे दिन सुबह मलयप्पस्वामी कल्पवृक्षवाहन पर श्रीदेवी-भूदेवी के साथ तिरुमाडावीथियों में दर्शन देता है कामितार्थ प्रदायिनी के रूप में कल्पवृक्ष के बारे में इतिहास, पुराणों में एक विशिष्ट स्थान है। क्षीर सागर में पैदा हुआ कल्पवृक्ष केवल इच्छाओं की पूर्ति करती है। लेकिन कल्पवृक्षवाहन पर आरूढ़ मलयप्पस्वामी ऐहिक, आमुष्मिक सुखों को प्रदान करता है। श्री वेंकटेश्वर स्वामी कल्पवृक्ष वाहन पर गायों की रक्षा करनेवाले गोपाल के रूप में दर्शन देता है। इस कलियुग में आश्रितकल्पवृक्ष

नवरात्रि ब्रह्मोत्सवों में चौथे दिन शाम को मलयप्पस्वामी सर्वभूपालवाहन पर आरूढ़ होते हैं। लोगों के रक्षक, पालक राजा होते हैं। श्री वेंकटेश्वर स्वामी लोगों के, राजाओं के रक्षक हैं। सर्वभूपालकों के अधिपति है। इसलिए आज मलयप्पस्वामी सर्वभूपाल वाहन में कालीयमर्धन अलंकार में दुष्ट को शिक्षित करते हुए दर्शन देते है।

## पाँचवे दिन - मोहिनी अवतार

पाँचवे दिन सुबह मलयप्पस्वामी मोहिनी का रूप धारण करके दानवों को मोहित किए जगन्मोहिनी के रूप में सोने के पालकी में भक्तजनों को दर्शन देता है। श्रीकृष्ण पालकी पर विराजित होकर पीछे ही आते दर्शन देते है। मलयप्पस्वामी मोहिनी अलंकार में खडे होने के बगैर बैठे हुए भंगिमा में दर्शन देते हैं। स्त्रियों द्वारा अलंकृत सारे आभूषण पहनकर

स्वामी भक्तजनों के सामने ही कल्पवृक्षवाहन पर जुलूस निकलते हुए भक्तों की इच्छाओं को पूरा करता है। श्री वेंकटेश्वर स्वामी ही भक्तजनों का कल्पवृक्ष है।

## सर्वभूपाल वाहन

स्वामी दर्शन देते हैं। स्वामी को पवित्र रेशमी साडी, मुकुट पर सूर्य, चंद्र की आकृति के आभरण को अलंकृत करते हैं। इस वाहन सेवा की एक विशिष्टता है। बाकी सब वाहन सेवाएँ स्वामी के मंदिर के वाहन मंडप में से शुरू होता है लेकिन मोहिनी अवतार की वाहन सेवा आनंदनिलय से ही पालकी पर से आरंभ होता है। इस वाहन सेवा में स्वामी रत्न हार का धारण करके अपने दाये हाथ में तोते को पकडे रहते हैं। कहते हैं कि- इस हार और तोते को श्रीविल्लिपुत्तूर की स्वामी भक्तिन आंडाल (गोदादेवी) से लाया गया है।

## गरुड वाहन

तिरुमल में होनेवाले नवरात्रि ब्रह्मोत्सवों में पाँचवे दिन के रात होनेवाले गरुडोत्सव अत्यंत प्रमुख है। स्वामी का प्रधान वाहन गरुड है। इसलिए गरुड को 'पेरिय तिरुवडि' (प्रधान भक्त, प्रथम भक्त के) कहते हैं। इस वाहन सेवा की एक महत्व है। पूरे वर्ष में सब दिन ध्रुवबेर (आनंदनिलय की मूर्ति) को अलंकृत करनेवाला मकरकंठि, लक्ष्मी हार, सहस्रनाम आदि महोन्नत आभरणों से उत्सवमूर्ति मलयप्पस्वामी को सज्जित किये जाते हैं। इसी तरह इस दिन स्वामी के मंदिर के सामने स्थित बेडिआंजनेय स्वामी (हनुमानजी) के आलय से राज्य की ओर से राष्ट्र मुख्यमंत्री के द्वारा स्वामी को रेशम और मखमल के नये कपडे प्रदान किया जाता हैं। गरुड वाहन सेवा में स्वामी के साथ देवियाँ नहीं रहती हैं। उस दिन श्रीविल्लिपुत्तूर से गोदादेवी को सज्जित किये गये फूलमाला को तिरुमल लाकर उसे मलयप्पस्वामी को अलंकृत करते हैं। इस वाहन सेवा के दस दिन पहले तमिलनाडु से भक्त बृंद पैदल आकर नूतन सफेद छत्रों को स्वामी को समर्पित करते हैं। ब्रह्मोत्सव के सब वाहन सेवाओं में इस वाहन सेवा को अत्यधिक महत्व दिया जाता हैं। इस वाहन पर भगवान का दर्शन करना मुक्तिप्रद मानते हैं।

## छठे दिन - हनुमंत वाहन

नवरात्रि ब्रह्मोत्सवों में छठे दिन मलयप्पस्वामी हनुमंत वाहन पर आरूढ़ होकर तिरुमाडावीथियों में दर्शन देते हैं।

लोकहित के लिए ही मैं त्रेतायुग में श्रीराम के रूप में, कलियुग में श्री वेंकटेश्वर स्वामी के रूप में अवतार लिया है। इसी विषय को ज्ञात कराने के लिए आज अपने अनन्य भक्त हनुमान वाहन पर आरूढ़ होकर वेंकटाद्रि राम के रूप में दिखाई देता है। हनुमान दास्य भक्ति का प्रतीक और आदर्श है। इसी दिन दोपहर वसंतोत्सव होता है।

### पुष्पक वाहन

ब्रह्मोत्सवों में छठे दिन के शाम होनेवाले पुष्पकविमान सेवा अत्यंत प्रधानता है। कई रंग-बिरंगी फूलों से सेवा की जाती है। यह देश-विदेशों से लायी जाती है। पुष्पकविमान को कई फूलों से सज्जित की जाती लेकिन श्रीनिवास भगवान को तुलसी अत्यंत प्रिय है इसलिए पुष्पक विमान के अंदर तुलसीमाला का अधिक उपयोग की जाती है।

### गज वाहन

छठे दिन रात मलयप्पस्वामी गजवाहन पर आरूढ़ होकर तिरुमाडावीथियों में दर्शन देते हुए भक्तों के मन को पारवश्य में डुबाते हैं। इस दिन का गजवाहन भागवत के गजेंद्रमोक्ष वृत्तांत को याद दिलाता है। ''संसार एक सरोवर है, मकर एक कर्म है, गजेंद्र जीव है''। संसार के कर्माओं से विमुक्ति दिलानेवाले भगवान विष्णुदेवता है। हर एक भक्त एक गजेंद्र है। संसार के बंधनों से, कर्म बन्धनों से विमुक्ति प्रसाद करने वाला केवल श्रीवेंकटेश्वर भगवान ही है। इसी परमार्थ को इस वाहन सेवा के द्वारा भगवान भक्तजनों को याद दिलाते हैं।

### सातवें दिन - सूर्यप्रभावाहन

सातवें दिन सुबह मलयप्पस्वामी सूर्यप्रभावाहन पर दर्शन देते है। स्वामी का रथ सारथि अनूर है। उस दिन आदित्य भगवान के रथ सारथि बनता है। इस दिन

श्री वेंकटेश्वर स्वामी अकेले वज्रकवच धारण करके सुबह सूरज के किरणों के साथ तिरुमल के माडावीथियों में शोभायात्रा करते हैं। ''दुनिया को रोशनी प्रदान करनेवाला मैं ही हूँ'' का बोध कराते हुए भगवान भक्तजनों को आरोग्य, ऐश्वर्य प्रदान करने का अनुग्रह देता है।

## चंद्रप्रभावाहन

सातवें दिन शाम को मलयप्पस्वामी चंद्रप्रभावाहन पर दर्शन देते हैं। चाँद निशाकर है। सूरज की रोशनी से चाँद प्रकाशित होता है। पुरुष सूक्तों के अनुसार चाँद का जन्म विष्णु भगवान के मन से हुआ है। चाँद शांत और ठंडेपन का प्रतीक है। इन दोनों वाहन सेवाओं को देखकर भक्त दिन और रात के अधिपति भगवान खुद को प्रकटित किया हुआ समझते हैं। इस वाहन पर स्वामी सफेद वस्त्र, सफेद पुष्प और मालाओं का धारण करके दर्शन देते हैं। इस वाहन सेवा के द्वारा भगवान भक्तजनों को शांत भाव से रहने का संदेश देता है।

## आठवें दिन - स्वर्णरथोत्सव

ब्रह्मोत्सवों में आठवें दिन सुबह रथोत्सव की शोभा देखनेलायक है। लोग रथ में आरूढ़ मलयप्पस्वामी के दर्शन पाकर पुनर्जन्म के बिना मुक्ति पाने की प्रार्थना करते हैं। कठोपनिषद में आत्मा एवं शरीर की तुलना रथयात्रा से की है। शरीर रथ है, बुद्धि सारथी है तथा मन लगाम है। हमारे इंद्रिय घोडे हैं। तथा उससे उत्पन्न विषयवासना विर्बाध दौड के रास्ते हैं। हृदय में आत्मा स्वरूप में स्थित स्वामी का सेवन करने से भगवान भक्त को अपने में लीन कर लेता है। जब तक इन विषयवासनाओं के पीछे अपने मन खोया रहता है तब तक परमात्मा में विलीन संभव नहीं हो पाता। रथ की रस्सियाँ पकडकर भक्तजन भगवान को अपनी

ओर खींचते हैं भक्तजन इस वाहन सेवा में स्वयं भाग लेते हुए आनंद विभोर हो उठते हैं। 'रथस्थं केशवं दृष्ट्वा पुनर्जन्म न विद्यते'। इति श्रुतिवाक्य। यानि कि रथ में भगवान को देखने पर पुनर्जन्म नहीं होगा।

## अश्व वाहन

आठवें दिन को रात में मलयप्पस्वामी अश्ववाहन पर शोभायात्रा के लिए निकलते हैं। इस वाहन का उद्देश्य यही है कि कलियुग के अंत में श्रीनिवास भगवान अश्व पर कल्किरूप धारण कर दुष्टों का संहार एवं शिष्टों की रक्षा करने हेतु अवतरित होंगे। स्वामी इस अवतार में दुष्टशिक्षणा, शिष्ट रक्षणा करनेवाला कल्किरूप में दर्शन देता है।

## नौवें दिन

नौवें दिन ब्रह्मोत्सवों का अंतिम दिन है। इस दिन सुबह को श्रीस्वामिपुष्करिणी में चक्रस्नान उत्सव मनाया जाता है। इस दिन तिरुमल क्षेत्र के वराह स्वामी के मंदिर में मलयप्पस्वामी और उनकी दोनों देवियाँ श्रीदेवी, भूदेवी और चक्रत्ताल्वार का अभिषेक का निर्वहण किया जाता है। बाद में स्वामिपुष्करिणी में सुदर्शन चक्र का पुण्यस्नान किये जाते हैं। तब लाखों भक्तजन उसी समय पुष्करिणी में डुबुकियाँ लगाते हैं। यही चक्रस्नान का महोत्सव है। भक्तजनों का विश्वास है कि चक्रस्नान के समय पुष्करिणी में जो लोग स्नान करते हैं। उन लोगों के पापों का नाश होता है।

## देवतोद्वासन

ब्रह्मोत्सवों के नौवें दिन के शाम जिन देवताओं एवं ऋषियों को ब्रह्मोत्सवों में निमंत्रण किया गया था, उनको फिर आनेवाले ब्रह्मोत्सव में भाग लेने के लिए प्रार्थना के साथ बिदायी की जाती है और इसी के साथ ब्रह्मोत्सवों की परिसमाप्ति हो जाती है। शाम को तिरुच्चि उत्सव का निर्वहण होता है।

इन्हें नवरात्रि ब्रह्मोत्सव कहते हैं। यह ब्रह्मांडनायक का ब्रह्मोत्सव हैं। इन उत्सवों में हर एक वाहन सेवा का वीक्षण मन को आनंद परवश में डुबो देती है। हम भी इन वाहन सेवाओं का वीक्षण करके पुनीत बन जाएँगे।

**कलौ वेंकटनायकः।**

# देवी-नवरात्रियों की शोभा

- श्री पी.वी. लक्ष्मीनारायण

## भूमिका

भारत उत्सवों तथा पर्वों का देश है। यहाँ हर दिन एक न एक उत्सव या पर्व मनाया जाता है। भारत में अनगिनत पर्व हैं, जिनमें ''दशहरा'' 10 दिन-मनाये जाने वाला एक पर्वों की श्रृंखला है।

दशहरा बुराई पर भलाई की जीत का द्योतक के रूप में मनाया जाता है। दशहरा स्त्रीशक्ति की राक्षसत्व के वध या विजय का सूचक है। देवी माँ ने लोक-कंटक राक्षसों पर स्वयं हमला कर, उन पर अपनी असीम शक्ति का प्रयोग कर उन लोगों का निर्मूलन कर, प्रजा-जीवन को सरल एवं निष्कंटक बनाया था। इस साध्य के लिए महामाई को ''नौ दिन'' लग गया था। उन घनघोर युद्ध-गति के नौ दिनों की अवधी को लोगों ने ''देवी-नवरात्रियाँ'' नाम देकर जश्न मनाया था।

इस प्रकार नवरात्रि पर्व अत्यंत अद्भुत और देव-दूतों के उत्सवों में एक है। यह प्रधानतया हिन्दुओं के लिए समादरित एक नौ दिनों का आनंदमय त्योहार है।

## राक्षसों का आविर्भाव

महिष्मति नाम की एक महिला ने श्राप के कारण महिष (भैंस) का रूप धारण किया था।

रंभुडु नामक एक राक्षस ने अग्निदेव से तपस्या की, तो अग्नि ने उसे वर दिया था। रंभुडु जिस जानवर से संभोग करेगा, उस जानवर के गर्भ से उसकी संतान होगी। महिष्मती नामक महिष से रंभुडु का संभोग हो गया, तो उन दोनों के संयोग के फलस्वरूप ''महिषासुर'' नामक महा बलशाली एक पुत्र का जनम हो गया था।

ऐसे ही दुर्ग, दुर्गम, रुरु आदि राक्षसों का अनेकानेक दुर्दान्त राक्षसों का जनम हो गया था। इन नरहंत राक्षसों से लोगों की हिंसा तथा हनन हो रहा था। भूलोक में इन दानवों के हिंसाकाण्ड से कल्लोल मचा हुआ था।

## दुर्गा माँ का आविर्भाव

इन हिंसा-साम्राट दुर्जनों के संहार के लिए शंकर भगवान ने अपनी अर्धांगी-पार्वती को आदेश दिया था कि अम्बाजी आदिशक्ति है। माँ की अतुलित भीषण शक्ति के प्रयोग से दानवों का संहार कर दे।

ब्रह्मदेव ने भी माँ पार्वती की अजेय शक्ति को दानवों के संहार करने की प्रेरणा

दी। समस्त देवताओं ने अपनी सामूहिक ''दैवशक्ति'' को एकजुट बना कर, ''त्रिकला'' नामकी प्रचण्ड स्त्रीशक्ति को उत्पन्न करके ''महिषासुर'' आदि राक्षसों पर हावी कर दिया।

इस प्रकार, ब्रह्म-शंकर-समस्त देवी-देवताओं की प्रेरणा तथा शक्ति-समूह को लेकर ''दुर्गाभवानी'' का आविर्भाव हो गया और लोकजन-कंटक राक्षसों का घनघोर युद्धानंतर वध कर उस महामाई ने लोक-मंगल की स्थापना की थी। इस भीषण अपनी लीलावतार नौ धर कर, माँ दुर्गा ने शांति की स्थापना की थी।

## नवावतारिणी दुर्गा

उपरोक्त कथन में हमने कहा है कि माँ दुर्गा ने नौ अवतारों को धर कर एक-एक दिन एक-एक राक्षस-प्रमुख का वध किया था। उन नौवों दिनों में एक-एक राक्षस से युद्ध करते समय, माँ की वेष-भूषा कुछ इस प्रकार थी-

नौ दिन संपन्न होने वाले इसे ''नवरात्रि-उत्सव'' की आनंद-हेला का वर्णन न किया जा सकता है। नौ दिनों का यह त्योहार बुराई पर भलाई का संकेत देता है। अधर्म पर धर्म का पुनरुद्धार सूचित करता है। लोगों की प्रतिकूलताओं की सिद्धि करता है। और, साथ-साथ सानुकूलता एवं पवित्रता की वृद्धि करता है।

नवरात्रि के दिनों में, स्त्रीयाँ-विश्वशक्ति दुर्गादेवी की नौवों रूपों की पूजा करती हैं। माँ की महिमा का गायन किया जाता है और माता का आवाहन करते हैं। इस संदर्भ में माँ दुर्गा द्वारा व्यक्त सभी रूप- शक्ति, बल, शौर्य, ज्ञान, सुंदरता, दया और ऐश्वर्य के सूचक होकर विराजमान होते हैं।

नवरात्रि के पावन अवसर पर दुर्गामाई के इन नवरात्रि के अवतारों की पूजा की जाती है-

### 1) शैलपुत्री अवतार

नवरात्रि के नौ दिनों के देवी के नामों में प्रथम दिवस का नाम ''शैलपुत्री'' है। इसका साहित्यिक अर्थ होता है - पर्वतराज

(हिमालय) की पुत्री। शैलपुत्री सती, भवानी, पार्वती और हैमवती जैसे विभिन्न नामों से पहचानित हुई है। वह है- ब्रह्म, विष्णु तथा महेश्वरों की संपूर्ण शक्ति की स्वरूपिणी होती है। देवी के ललाट पर अर्धचंद्राकार चाँद दाहिने हाथ में त्रिशूल और बायें हाथ में कँवल के फूल लेकर विराजमान होती है। वह ''नंदि'' नाम के बैल पर सवारी करती है।

**धरने के रंग :** नारंगी का रंग शैलपुत्री के लिए आकर्षित व अधीन है, नारंगी फल, फूल आदियों से माँ को अर्पित किया जाता है। नारंगी रंग के वस्त्र इस दिन माँ को पहनाये जाते है।

नारंगी का रंग उत्साह, विजय और आनंद का सूचक है।

### 2) ब्रह्मचारिणीदेवी

दूसरे दिन की देवी ''ब्रह्मचारिणी'' है।

वह काठिन्य और तपस्या की माँ होती है, क्यों कि उसका नाम ब्रह्मचारिणी है, ब्रह्मचर्य को प्रापंचिक सुखों से त्यागने वाली महिमा दिखाई देती है।

ब्रह्मचारिणी के दाहिने हाथ में जपमाला और बाइने हाथ में कमंडल धर कर, नंगे पाँव चलती है। ब्रह्मचारिणी अपने भक्तों को दया, आनंद, शांति और श्रेय का प्रसादन करती है।

**माँ के धरने का रंग :** ''सफेद'' रंग के कपड़े-पहनती है। सफेद फल, फूल और प्रसाद का निवेदन किया जाता है। सफेद वर्ण स्वच्छता, कन्यात्व, अंतर्गत शांति और पवित्रता का सूचक होता है। सफेद ब्रह्मचर्य का सूचक है।

### 3) चन्द्रघंटिकादेवी

तीसरे दिवस दुर्गामाई को ''चन्द्रघंटिकादेवी'' का अवतार माना जाता है। परमशिव से विवाहानंतर पार्वतीजी ने अपने भाले पर अर्ध-चन्द्रमा का धारण किया था। इसी कारण माँ का नाम चंद्रघंटिकादेवी पड़ा था।

जीवन में प्रशांतता और श्रेयस के वास्ते भक्तलोग और अनुचर इस देवी का ध्यान किया करते हैं। वह एक बाघ पर बैठी है। उसके दस हाथ और तीन आँखें होंगीं। और-माँ ने अपने बायें के चारों हाथों में त्रिशूल, गदा, खड्ग और कमंडलू का धारण किया हुआ है। माँ का पाँचवाँ हाथ वरद-मुद्रा में है।

देवी के दायें वाले चौथे हाथ में कमल, धनुष, जपमाला पकड़ी हुई हैं। पाँचवाँ दायाँ हाथ अभय की मुद्रा में होता है।

**धरने का रंग :** लाल और गुलाबी है।

नवरात्रियों के तीसरे दिन उपासक अभिरुचि, निर्भीकता आदियों के जीवन की मार्मिकता की उपासना करते हैं। माँ इस दिन लालरंग के वस्त्र पहन कर विराजति है।

लाल-लाल मिठइयों व अन्नप्रसाद के रूप में माँ को निवेदित कर, लोगों में बाँटते हैं।

## 4) कूष्माण्डदेवी

जलते सूरज-मंडल की कांति तथा असीम शक्ति को अपने में समाये रहने के कारण इस दिन की देवी को ''कूष्माण्डदेवी'' के नाम से पुकारते हैं। भानु-प्रताप वाले शारीरक रंग को अपनायी हुई कूष्माण्ड माता ने अपनी दिव्य तथा प्रकाशमान मुस्कान से इस संसार की सृष्टि की हुई घनता पायी हुई है।

इस देवी माँ की यह प्रामुख्यता रही है कि वह अपने आराधकों को अच्छे-से श्रेय, बल तथा सामर्थ्य का प्रसादन करेगी।

आठ भुजाओं से प्रातिनिध्य देने के कारण इसे ''अष्टभुजादेवी'' के नाम से पुकारते हैं। उसके आठ हाथों में त्रिशूल, चक्रायुध, खड्ग, जापत्री, धनुष-बाण, शहद एवं रुधिर से भरे दो पात्र चित्रित हुए होते हैं। उनका एक हस्त अभय-मुद्रा में होता है, जिस हाथ से माँ अपने समस्त अनुचरों को आशीर्वाद देती है।

कूष्माण्डदेवी हमेशा बाघ पर सवार होती है।

**रंग धारण :** आज देवी माँ के धरने का रंग ''रॉयल ब्लू'' है। यह रंग देवी माँ की गांभीर्यता एवं शौर्य की गरिमा का द्योतक है। इस दिन ब्लू रंग के फूलों तथा अन्न-प्रसादों से माताजी की आराधना होती हैं।

## 5) स्कन्दमाता

भगवान कुमारस्वामी या सुब्रह्मण्येश्वर ''स्कंदवीर'' कहलाता है, जो देवताओं का सेनापति है। स्कंदयोद्धा पार्वतीमाता का पुत्र है। अतएव, स्कन्दमाता (पार्वतीदेवी) अपने वीरयोद्ध। संतान स्कन्द को बच्चे के रूप में अपने गोद में ली हुई क्रूर सिंह अपना वाहन बनाकर विचरती है। विश्वास किया जाता है कि स्कन्दमाता देवताओं की सेनाओं के समुदाय का, राक्षसों के खिलाफ, सर्वम्-सहा-सेनाधिकारिणी घोषित कर दी गयी थी। इस कारणवश माताजी की ''अग्निदेवता'' के नाम से भी स्तुति की जाती है।

इस देवीजी को प्रतिमा चार हाथों, ऊपर से दो हाथों में कमल के फूलों से, एक अभयमुद्रा के साथ, दायें हाथ में बालक-स्कन्द को धरी हुई चित्रित की जाती है। अक्सर, इस देवी को कमल के फूल पर आसीन भी चित्रित किया जाता है। माँ की इस मुद्रा या भंगिमा को ''पद्मासनी-मुद्र'' कहते हैं।

**तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।**

### तिरुमल यात्री इनको आचरण न करें, तो अच्छा होगा।

- अपने साथ कीमती आभूषण या अधिक नकद न रखें।
- भगवान के दर्शन के लिए मात्र ही तिरुमल पधारें, अन्य किसी उद्देश्य से नहीं।
- दर्शन के लिए जल्दबाजी न करें, क्यू लाइन में ही सक्रम जाने का प्रयत्न करें।
- मंदिर के आचार-व्यवहारों के अनुरूप मंदिर में प्रवेश निषिद्ध है, तो कृपया मंदिर को न आवें।
- तिरुमल में सभी फूल भगवान की पूजा के लिए है इसलिए पुष्पों का धारण न करें।
- पानी और बिजली को वृथा न करें।
- अपरिचितों को काटेज में प्रवेश न दें। चाबियों को उन्हें न सौंपें।
- पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रिक थैलियों के अलावा किसी अन्य प्लास्टिक थैलियों का उपयोग न करें।
- चार माडावीथियों में चप्पल धारण न करें।
- भगवान दर्शन और आवास के लिए धोखेबाज या दलाल से संपर्क न करें।
- फेरीवालों से नकली प्रसाद मत खरीदें।
- तिरुमल मंदिर के परिसरों में थूकना आदि असह्य कार्य न करें।
- सेलफोन, कैमेरा जैसी चीजें और आयुधों को मंदिर के अंदर न ले जायें।
- विविध राजकीय कार्यकलाप, सभायें, ब्यानर, रास्तारोक, हडताल आदि सप्तगिरियों पर निषेधित है।

**रंग-रूप :** माँ की इस मुद्रा का पीलारंग होता है। भक्तलोग भी पीले के रंग के वस्त्र पहनते हैं। पीलारंग आपको उत्साहित तथा उल्लासित रखता है।

### 6) कात्यायनी

माँ दुर्गा का छठा रूप ''कात्यायनी'' है। कात्यायनी महालक्ष्मी समझी जाती है और उसी तौर पर पूजा-अर्चना लेती है।

वृषभ-राक्षस महिषासुर का संहार करने-हेतु कात्यायनी का जनम हुआ था। कात्यायनी को निर्वचित करने के क्रम में तथा लक्षणों में क्रोध, प्रतिहिंसा और बुराइयों पर अंतिम विजय निहित हैं। निर्मल हृदय से, अत्यंत-विश्वास के साथ माँ की कीर्ति से सब लोगों को वरप्रसाद मिल जाते हैं।

वह अद्भुत शेरनी पर सवार होकर, चार हाथों से चित्रित की हुई है। उसके बायें हाथों में तलवार और कमल एवं अभयमुद्रा तथा वरदमुद्रा दाहिने हाथ में है।

**माँ का रंग-ढंग :** इस रंग नये प्रारंभ एवं आविष्कारों के साथ उलझा हुआ होता है। इस रंग का धारण-संतानोत्पत्ति और बढ़ावा या वृद्धि के अनुमोदन में किया जाता है।

### 7) कालरात्रि

नाम से ही जान पड़ता है कि माँ गाढ़ा-रंग, क्रोध से भरा हुआ आत्मा और निर्भय-भंगिमा के विधान में माँ इस दिन दर्शन देती है। उसकी लाल-लाल और बड़ी-बड़ी आँखें, रुधिर-रंग की जिह्वा बाहर निकाली हुई होती है। हाथ में मृत्युदंड माँ को मृत्युदेवता घोषित करता है।

इस प्रकार वह काली माँ अथवा कालरात्रि के नामों से विख्यात है। खूब बिखरा हुआ बाल, काले-काले केश

## नवंबर 2023

**१० से १८ तक तिरुचानूर**
**श्री पद्मावतीदेवी का ब्रह्मोत्सव**
**१२. नरक चतुर्दशी, दीपावली**
**१३. श्री केदारगौरीव्रत**
**१४. तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का गजवाहन सेवा, बाल दिवस**
**१७. नागुलचविति**
**१८. पंचमीतीर्थ**
**१९. तिरुमल श्री बालाजी का पुष्पयाग, तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का पुष्पयाग**
**२४. कैशिकद्वादशी, श्री चक्र तीर्थ मुक्कोटी**
**२६. कार्तिक पूर्णिमा**
**२७. श्री कपिल तीर्थ मुक्कोटी**

और तीन गोलाकार नेत्रों से सिर, गधे पर सवार दिखाई देती है। उसके चार हाथ हैं। अभयमुद्रा दी हुई दिखाई देती है। व्यथार्थ-मुद्रा में भी माँ गोचरित होती है। दोनों हाथों में तलवार ली हुई होती है।

**धरने का रंग :** इस दिन माता का भस्म-रंग से अलंकार होता है। आराधक भी भस्म के रंग के वस्त्र पहनते है। भस्मरंग शक्ति का संतुलन करता है। और भी भस्मवर्ण प्रजा को धरती पर सुरक्षित रखता है।

### 8) महागौरी

महागौरी श्री दुर्गादेवी का आठवाँ रूप है। और माता के नव-रूपों में अत्यंत मनोहर यह रूप माना जाता है। उसकी सुन्दरता मोतियों की स्वच्छता की भाँति चमकती है। यह देवी स्वच्छता, परिशुभ्रता, सहन और शांति की देवी होने के नाते, उसकी आराधना-उपासना करने वालों के लोप और गलतियाँ भस्म बन कर रहेंगी।

महागौरी के चार हाथ हैं। वह अपने दाँयें हाथ को पीड़ा-हारिणी-भंगिमा में और नीचे के दायें हाथ में त्रिशूल

को धारण करती है। उसके ऊपरी बाँये हाथ में तान्पूरा धरी हुई होती है और नीचे के बाँयें हाथ से आशीर्वाद देती है।

**धरने के रंग-ढ़ंग :** आप लोग महागौरी की पूजा करते समय श्यामला रंग के वस्त्र पहनिये। यह रंग ऐश्वर्य, बड़प्पन, शक्ति तथा सामर्थ्य का प्रसादन करता है।

### 9) सिद्धिधात्री

इस अवतारवाली माँ को सहज ही वैद्य करने की शक्ति होती है। वह आनंदित और मंत्रमुग्ध करने की भंगिमा में हुई होती है। वह कमल या बाघ अथवा शेरनी पर सवार करने वाली ''सिद्धिधात्री देवी'' है।

सिद्धिधात्री देवी के चार हाथ हैं। माँ एक हाथ में गदा तथा और एक में चक्र को धारण की हुई है। एक में कमल का फूल और एक हाथ में शंख।

**धरने का रंग :** मयूर-पुच्छ का रंग धारण करें। यह रंग सदा दया, समग्रता और जागरूकता हममें सतर्क जागेगी।।

### परिसमाप्ति

नवरात्रि या दशहरा शक्ति अथवा जोश और जोबन का त्योहार है। स्त्रीपक्ष की शक्ति एवं जगरूकता का यह पर्व उल्लास तथा उत्साह का द्योतक है। इतिहास की गति में इस त्योहार के पश्चात् मानव के पंच-भूतात्मक प्रकृति पर अंतिम विजय का दायक के रूप में दर्शन देता है। यह हर्षोल्लास-पूरित पर्व लोग अत्यंत स्फूर्तिदायक विधा में मना कर, परंपरागत अधर्म पर धर्म भलाई की विजय एवं स्त्रीशक्ति के स्तोत्र-गान के रूप में व्यक्त करते हैं।


**तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।**

## लेखक-लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले कृपया लेखक-लेखिकाओं निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

1. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, दैव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।
2. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।
3. किसी विशिष्ट त्यौहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए ३ महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।
4. रचना के साथ लेखक धृवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में प्रकाशित नहीं है।'
5. रचनाओं को प्रकाशन करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक का कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।
6. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक पास बुक का प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ संलग्न करके भेजना अनिवार्य है।
7. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं को निम्न पते पर भेज दें। पता-

**प्रधान संपादक,**
**सप्तगिरि कार्यालय,**
**ति.ति.दे.प्रेस परिसर, के.टी.रोड,**
**तिरुपति – 517 507. चित्तूर जिला।**

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

# ओंटिमिट्टा, श्री कोदंडरामस्वामी मंदिर

आंध्रप्रदेश, कडपा जिला, ओंटिमिट्टा प्रांत में विराजित श्री कोदंडरामस्वामी मंदिर बहुत प्राचीन श्रीराम मंदिर है। इस प्रांत को 'एकशिलानगर' भी कहते हैं। इस मंदिर का निर्माण जांबवंत ने किया। इस आलय से संबंधित दर्शन एवं सेवा का विवरण निम्नांकित हैं।

## मंदिर का दर्शन समय

प्रातः 5.00 बजे से रात 9.00 बजे तक भगवान जी को दर्शन कर सकते है।

प्रातः 5.00 बजे से सुबह 7.30 बजे तक दर्शन

सुबह 7.30 बजे से सुबह 8.15 बजे तक प्रथम घण्टानाद

सुबह 8.15 बजे से सुबह 10.30 बजे तक दर्शन

सुबह 10.30 बजे से सुबह 11.15 बजे तक द्वितीय घण्टानाद

सुबह 11.15 बजे से सायं 5.30 बजे तक दर्शन

सायं 5.30 बजे से सायं 6.15 बजे तक तृतीय घण्टानाद

सायं 6.15 बजे से रात 8.45 बजे तक दर्शन

रात 8.45 बजे से रात 9.00 बजे तक एकांतसेवा

## भगवान जी का सेवा टिकट विवरण

1) कल्याणोत्सव - रु.1,000/- दो व्यक्ति के लिए, समय सुबह-9.00 बजे को

2) अभिषेक - रु.150/- दो व्यक्ति के लिए, हर शनिवार, समय सुबह-6.00 बजे को

3) स्वर्ण पुष्पार्चन - रु.250/- एक व्यक्ति के लिए, हर रविवार, समय सुबह-8.30 बजे को

**सूचना**

मंदिर के प्रांगण में स्थित काउण्टरों में (या) ऑनलाइन के माध्यम से भी टिकट प्राप्त कर सकते है। कृपया भेंट हुण्डी में ही डालें।

# सुंदर बजरंगबली - हनुमद्वाहन वैभव

- डॉ.एम.लक्ष्मणाचार्य

*"जय जय हनुमान - जय हनुमान -*
*हनुमान से बढ़कर नहीं कोई बुद्धिमान*
*हनुमान एक महान रामभक्त हैं।"*

*'श्रीरामदूतं शिरसा नमामि।'*

मेरु पर्वत पर केसरी नामक कपिराजा राज्य का पालन कर रहा था। उसकी पत्नी थी अंजना जिसने हनुमान को जन्म दिया था। वाल्मीकि रामायण में भी कहा गया है कि *"अंजना सुप्रजा येन मातारिश्वा च सुव्रता।"*

सुंदरकांड में स्वयं हनुमान ने सीतादेवी को अपनी जन्म कथा सुनाते हुए कहा था -

*माल्यवान्नाम वैदेहि! गिरीणा नुत्तमो-गिरिः*
*ततो गच्छति गोकर्णं पर्वतं "केसरी हरिः"*
*स च देवर्षिभिर्दिष्टः पिता मम महाकपिः*
*तीर्थे नदीपतेः पुण्ये शंबसादनमुद्धरन्"*

इससे स्पष्ट है कि हनुमान महाकपि केसरी एवं माता अंजनादेवी के पुत्र हैं।

गोस्वामी तुलसीदासजी ने भी कहा था-

*"शंकर सुअन केसरीनंदन"*

(हनुमान चालीसा)

अब हम शीर्षक पर आयेंगे- "सुंदर बजरंग" की पहले व्याख्या करेंगे। 'सुंदर' से तात्पर्य केवल शारीरिक रूप से आकर्षक या

रमणीय ही नहीं बल्कि अत्यंत सुंदर मन का होना भी है। ''सुतराम आद्रीयते इति सुंदरः'' यह है सुंदर शब्द की प्रक्रिया। ''सबको आकर्षित (आकृष्ट) करनेवाला, सब के लिये आदरणीय'' नामक अर्थ भी कह सकते हैं। हनुमानजी ने न केवल अपने साथियों, आराधकों, रामायण-श्रोताओं, पाठकों तथा सीता-राम को ही नहीं बल्कि अपने सौंदर्य से आकर्षित करनेवाला एक मात्र विलक्षण व विशिष्ट कपिराज था।

रामायणकार ने संदर्भों के अनुसार प्रत्येक कांड का नामकरण अलग-अलग दिया था - जैसे बालकांड, अयोध्याकांड, अरण्यकांड, किष्किंधाकांड एवं युद्धकांड। परन्तु सुंदरकांड जो किष्किंधा-युद्धकांड के बीच है - ऐसा एक-मात्र कांड है जिसका संबंध कथाक्रम से नहीं।

**इस कांड में प्रधानतः तीन पात्र हैं एवं तीनों 'सुंदर' हैं। सीताजी त्रिलोक जननी तो जो स्वयं 'श्रीमहालक्ष्मीजी' है। त्रिलोक सुंदरी भी है। श्रीरामजी तो केवल मर्यादपुरुषोत्तम ही नहीं, शील, शक्ति तथा लोकातीत सौंदर्य का संगम हैं। (पुंसां मोहन रूपाय...) वे पुरुषों को भी सम्मोहित करते हैं। हनुमान का सौंदर्य तो निरूपमान है। इस कांड में न युद्ध हैं और न मृत्यु। प्रकृति दृष्टि से भी सौंदर्य ही सौंदर्य है। ऐसे सुंदरकांड में ''किं न सुंदरम्''? सुंदरकांड में हनुमान का प्रधान पात्र है 'जो सुंदर की मूरत' है।**

हनुमान के भव्य चरित को व्यास के पिता पराशर जी ने ''पराशर संहिता'' के नाम से लिखा था। जिस प्रकार राम चरित के लिये

'रामायण', कृष्ण चरित केलिये 'भागवत' हैं, उनके ही समतुल्य है - हनुमान चरितवाला ''पराशर संहिता।'' किष्किंधाकांड में हनुमान के प्रवेश से रामायण अनेक सुंदर मोड़ लेती है। **'हनुमा' नामक शब्द का अर्थ ''ज्ञानवान'' भी है।**

हनुमान भगवान सूर्य के शिष्य थे, वेदों व व्याकरण के वे पंडित बने। विभीषण शरणागति के संदर्भ में उनके द्वारा प्रदर्शित राजनीतिज्ञता प्रशंसनीय है। स्वयं शक्तिमान होकर भी उन्होंने स्वयं को ''दासोहं कोसलेन्द्रस्य......'' कहा था एवं श्रीराम को अपने सर्वस्व कहा था। शारीरिक बल एवं बौद्धिक बल... दोनों का हनुमान ने यथासमय एवं यथोचित उपयोग किया था। वे एक निस्वार्थ कर्मयोगी भी थे।

हनुमान में तीन विशेषतायें हैं -

1) स्वयं भक्तों की मनोकामनाओं की पूर्ति करते हैं।

2) भगवान पर स्वयं पूर्णतः निर्भर रहते हैं। एवं

3) भक्त एवं भगवान के बीच की कड़ी बनकर अर्थात दोनों को जोड़ने का कार्य करते हैं।

भगवान बालाजी श्री वेंकटेश्वर जी के ब्रह्मोत्सवों में हनुमद्वाहन-सेवा का अत्यंत महत्व है। ब्रह्मोत्सवों के छठवें दिन ''वेंकटाद्रिराम'' हनुमद्वाहन पर शोभायात्रा के लिए निकल पडते हैं। बालाजी को अपने कंधों पर ढ़ोते हुए हनुमान तिरुमाडावीथियों में विहरते हैं। हनुमान चिरंजीवि हैं। उन्हें मृत्यु का भय नहीं हैं।

हनुमंत वाहन पर विराजमान श्री मलयप्पस्वामी की शोभा देखते ही बनती है। हनुमान के नाम जप से हम अनेक रूपों से लाभान्वित हो जाते हैं। जैसे -

*बुद्धि र्बलं यशोधैर्यं निर्भयत्व मरोगता।*
*अजाड्यम् वाक्पटुत्वं च हनुमत्स्मरणात् भवेत्॥*

हनुमान के नाम लेने मात्र से बुद्धि, बल, यश, निड़रता, स्वास्थ्य, वाक्शक्ति इत्यादि हमें प्राप्त होते हैं। पदकविता पितामह एवं बालाजी के महान भक्त अन्नमय्याजी ने बजरंगबली हनुमान की महिमा का बढ़-चढ़ कर गान किया था -

*पेरिगिनाडु चूडरो पेद्दा हनुमंतुडु*
*परगि नाना विद्यसा बलवंतुडु*
*रक्कसुल पालिटि रणरंग शूरूडु*
*वेक्कसपु एकांग वीरूडु*
*दिक्कुलकु संजीवि तेच्चिन धीरुडु*
*अक्कजमैनट्टि आकारूडु॥*

*वो देखिये बड़े हनुमान और बढ़े हैं*
*स्वयं अनेक विद्याओं में निष्णात हैं।*
*राक्षसों के प्रति संग्राम वीर*
*अजेय एक मात्र वीर*
*लाये संजीवनी दिशाओं के लिये।*
*विस्मित करनेवाला है उनका आकार॥*

तिरुमल के सात पहाडों में एक है अंजनाद्रि पर्वत है जो सुविख्यात है। माता अंजनाजी के प्रियपुत्र हनुमान का इस प्रकार वाहन बनकर बालाजी की सेवा करना अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रसन्नता का विषय भी है। रामायण में इस बात का उल्लेख है कि हनुमान ने श्रीराम को अपने कंधों पर बिठाकर युद्ध में भाग लिया था। भगवान बालाजी श्रीराम का प्रतिरूप ही है जिन्हें ढोना, जिनका वाहन बनना समुचित है। श्रीवैष्णव सम्प्रदाय में हनुमान को 'सिरिय तिरुवडि' कहते हैं। बजरंगबली के कंधों पर विराजमान बालाजी का दर्शन करके भक्त पुलकित हो जाते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि महाबली एवं महान भक्त हनुमान का वैभव अवर्णनीय एवं अनुपम भी हैं। भगवान भी अपने प्रिय भक्त के कंधों पर बैठकर शोभायात्रा पर निकलते बहुत ही आनंद प्राप्त करते हैं।

*दूरीकृत सीतार्तिः प्रकटित रामवैभव स्फूर्तिः*

*दारित दशमुख कीर्तिः पुरतो मे भातु हनुमतो मूर्तिः॥*

**भाव :** सीता का दुःख नाशक, राम वैभव उद्घोषक एवं रावण यश मिटानेवाले हनुमान जी मेरे समक्ष विराजमान हो।

**जय रामदूत - जय वेंकटराम सेवक!**

# श्री वेंकटेश्वर मंगलाशासनम्

01) श्रियः कांताय कल्याणनिधये निधयेऽर्थिनाम्।
श्रीवेंकटनिवासाय श्रीनिवासाय मंगळम्।।

02) लक्ष्मी सविभ्रमालोकसुभ्रू विभ्रमचक्षुषे।
चक्षुषे सर्वलोकानां वेंकटेशाय मंगळम्।।

03) श्रीवेंकटाद्रिशृंगाग्र मंगळाभरणांघ्रये।
मंगळानां निवासाय श्रीनिवासाय मंगळम्।।

04) सर्वावयवसौंदर्यसंपदा सर्वचेतसाम्।
सदा सम्मोहनायास्तु वेंकटेशाय मंगळम्।।

05) नित्याय निरवद्याय सत्यानंदचिदात्मने।
सर्वांतरात्मने श्रीमद्वेंकटेशाय मंगळम्।।

06) स्वतस्सर्वविदे सर्वशक्तये सर्वशेषिणे।
सुलभाय सुशीलाय वेंकटेशाय मंगळम्।।

07) परस्मै ब्रह्मणे पूर्णकामाय परमात्मने।
प्रयुंजे परतत्त्वाय वेंकटेशाय मंगळम्।।

08) आकालतत्त्वमश्रांतमात्मनामनुपश्यताम्।
अतृप्त्यमृतरूपाय वेंकटेशाय मंगळम्।।

09) प्रायस्स्वचरणौ पुंसां शरण्यत्वेन पाणिना।
कृपयाऽदिशते श्रीमद्वेंकटेशाय मंगळम्।।

10) दयामृततरंगिण्यास्तरंगैरिव शीतलैः।
अपांगैसिंचते विश्वं वेंकटेशाय मंगळम्।।

11) स्रग्भूषांबरहेतीनां सुषमावहमूर्तये।
सर्वार्तिशमनायास्तु वेंकटेशाय मंगळम्।।

12) श्रीवैकुंठविरक्ताय स्वामिपुष्करिणीतटे।
रमया रममाणाय वेंकटेशाय मंगळम्।।

13) श्रीमत्सुंदरजामातृमुनिमानसवासिने।
सर्वलोकनिवासाय श्रीनिवासाय मंगळम्।।

14) मंगळाशासनपरैर्मदाचार्यपुरोगमैः।
सर्वैश्च पूर्वैराचार्यैः सत्कृतायास्तु मंगळम्।।

।। मंगलाशासनम् संपूर्णम् ।।

# ति.ति.दे. के
# नूतन न्यास-मंडली

**आं.प्र. सरकार के द्वारा 2023, आगस्त महीने में ति.ति.देवस्थान के नूतन न्यास-मंडली के अध्यक्ष और सदस्य के पद को शपथ लिया। उनका विवरण....**

**श्री बी.करुणाकर रेड्डी,**
एम.एल.ए., तिरुपति,
ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष

**श्री पी.वेंकट सतीष कुमार,**
एम.एल.ए.,
सदस्य

**श्री सामिनेनी उदय भानु,**
एम.एल.ए.,
सदस्य

**श्री एम.तिप्पे स्वामी,**
एम.एल.ए.,
सदस्य

**श्री सिद्धवटम् यानदय्या,**
सदस्य

**श्री चंदे अश्वर्थ नायक,**
सदस्य

**श्री मेका शेषुबाबु,**
सदस्य

**श्री आर.वेंकट सुब्बा रेड्डी,**
सदस्य

**श्री येल्लारेड्डीगारी सीताराम रेड्डी,**
सदस्य

**श्री गादिराजु वेंकट सुब्बराजु,**
सदस्य

**श्री पी.शरत चंद्रा रेड्डी,**
सदस्य

**श्री एस.राम्‌रेड्डी,**
सदस्य

**श्री बालसुब्रमणियन् पलनीसामी,**
सदस्य

## तिरुमल तिरुपति देवस्थान

# ति.ति.दे. के नूतन न्यास-मंडली

श्री एस.आर.विश्वनाथ रेड्डी,
सदस्य

श्रीमती जी.सीतारेड्डी,
सदस्य

श्री कृष्णमूर्ति वैथियनाथन,
सदस्य

श्री सिद्ध वीर वेंकट
सुधीर कुमार,
सदस्य

श्री सुदर्शन वेणु,
सदस्य

श्री नेरुसु नाग सत्यम्,
सदस्य

श्री आर.वी.देश पांडे,
सदस्य

श्री अमोल काले,
सदस्य

डॉ.एस.शंकर,
सदस्य

मिलिंद केशव नार्वेकर,
सदस्य

डॉ.केतन देशायी,
सदस्य

श्री बोरा सौरभ,
सदस्य

श्री आर.करिकाल् वलवन्, आई.ए.एस.,
आं.प्र. के विशेष मुख्य सचिव,
धर्मस्व विभाग,
पदेन सदस्य

श्री एस.सत्यनारायण, आई.ए.एस.,
आं.प्र. के धर्मस्व शाखा के आयुक्त,
पदेन सदस्य

श्री सी.मोहित रेड्डी,
तुडा - अध्यक्ष, तिरुपति,
पदेन सदस्य

श्री ए.वी.धर्मारेड्डी, आई.डी.ई.एस.,
ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी,
(पदेन) सदस्य - सचिव

# तिरुमल तिरुपति देवस्थान

दि.27.08.2023 से दि.29.08.2023 तक तिरुमल श्री बालाजी के मंदिर में ''पवित्रोत्सव'' कार्यक्रम को आयोजित किया गया। यागशाला में श्रीदेवी भूदेवी सहित श्री मलयप्पस्वामी जी को पूर्णाहुति से इस पूजा उत्सव को परिसमाप्त किया था। इस संदर्भ में ति.ति.दे. ई.ओ. श्री ए.वी.धर्मरेड्डी, आई.डी.ई.एस., के साथ अन्य उच्च पदाधिकारीगण ने भाग लिया।

दि.02.09.2023 को तिरुमल वैकुंठम् क्यू कांप्लेक्स-2 को ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री बी.करुणाकर रेड्डी जी ने जाँच किया था।

दि.16.08.2023 को तिरुपति में स्थित ति.ति.दे. के संबंधित मंदिरों को ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री बी.करुणाकर रेड्डी जी ने संदर्शन किया। इस संदर्भ में ति.ति.दे. जे.ई.ओ. श्री वी.वीरब्रह्मम्, आई.ए.एस., के साथ अन्य उच्च पदाधिकारीगण ने भाग लिया।

अलिपिरि, तिरुपति में स्थित एस.वी.सांप्रदायिक मूर्तिकला-वास्तुकला शिक्षण संस्थान में 'सांप्रदायिक मंदिरों की मूर्तिकला' विषय पर आयोजित त्रिदिवसीय कार्यशाला (04.09.2023 से 06.09.2023 तक) में मुख्य अतिथि के रूप में ति.ति.दे.न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री बी.करुणाकर रेड्डी ने पधार लिया। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. जे.ई.ओ. श्रीमती सदाभार्गवी, आई.ए.एस., जी ने भाग लिया।

दि.21.08.2023 को तिरुपति में स्थित एस.वी.विश्वविद्यालय स्टेडियम के पास ति.ति.दे. और श्री हनुमान दीक्षा पीठम् के संयुक्त आध्वर्य में 'कोटि हनुमान चालीसा पारायण महायज्ञ के रथयात्रा' को झंडा फहराकर ति.ति.दे. के जे.ई.ओ. श्रीमती सदाभार्गवी, आई.ए.एस., ने प्रारंभोत्सव किया।

# 'गोमाता' की सेवा में तिरुमल तिरुपति देवस्थान

- श्रीमती सुधा रंगराजन

'सनातन धर्म' विश्व का सर्वश्रेष्ठ धर्म है। इस धर्म की अपनी विशेषता है। जिस में दान का बड़ा महत्त्व है। हमारे विचार में दान से समृद्धि बढ़ती है।

दान कई प्रकार है। विद्या, अन्न, वस्त्र, धन आदि। इन सभी दानों से अतिश्रेष्ठ दान ''गोदान'' है। प्राचीन काल से ही गोदान की प्रथा भारत देश में चली आ रही है। भारत ही एक ऐसी भूमि है जो सभी जीवराशियों को सम्मानित करती है।

भगवान श्री वेंकटेश्वर के निवासित तिरुमल में गोसंरक्षण बहुत महत्त्वपूर्ण है। तिरुमल तिरुपति देवस्थान (टी.टी.डी.) ने यहाँ 'श्री वेंकटेश्वर गोसंरक्षण शाला' की नाम से एक गोशाला निर्मित की है।

श्री वेंकटेश्वर गोसंरक्षण शाला, टी.टी.डी. द्वारा कई वर्ष से काम कर रही है। ये अभी तिरुपति के तुम्मलगुंटा रोड पर है, इसके पहले श्री गोविंदराज स्वामी मंदिर के पास और अलिपिरि में था। स्थानीय गतिविधियों को शुरू करने के लिए पलमनेरु शहर में शाखाएँ स्थापित की गयी है। तिरुचानूर, श्री पद्मावती देवी मंदिर के सामने एक गजशाला (हाथी फार्म) काम कर रहा है। तिरुमल में भी गोशाला को मजबूत किया गया है। तिरुमल की तीर्थयात्रा पर निकलने से पहले भक्तों को 'गो पूजा' करने की सुविधा प्रदान करने के लिए अलिपिरि में 'सप्त गोप्रदक्षिण शाला' खोली गयी है।

टी.टी.डी. देशी गाय की नस्लों को प्रोत्साहित करती है। गाय से संबंधित कई गतिविधिया है। एक तरफ टी.टी.डी. गाय को दान के रूप में स्वीकार करती है, वही दूसरी ओर किसानों और मंदिरों के अनुरोध पर उन्हें गाय निःशुल्क रूप में प्रदान करती है।

गो को दान के रूप में स्वीकार करने के लिए एक प्रक्रिया है। जो गोदान करना चाहते है, उन्हें अपने गाय को पशुचिकित्सक के पास ले जाकर पशु के स्वास्थ को प्रमाणित करने के लिए 'ब्रुसलोसिस परिक्षण' करवाना होगा। नकारात्मक परिणाम मिलने पर, भक्त को टी.टी.डी. के काल सेंटर ०८७७-२२७७७७७ पर संपर्क करने के पश्चात डेरी फार्म से पूर्व नियुक्ति लेनी होगी। डेरी फार्म में भी पशु की जाँच की जाती है। संकर और जर्सी पशुओं का दान स्वीकार नहीं किया जायेगा।

तिरुमल पर्वत की तलहटी में स्थित स्थान को अलिपिरि कहा जाता है। टी.टी.डी. के द्वारा यहाँ पर एक आलय का निर्माण किया गया हैं। जिसमें भगवान श्री वेणुगोपालस्वामी (कृष्णा) जी विराजमान है।

अलिपिरि में 'श्री वेंकटेश्वर सप्त गोप्रदक्षिण मंदिर' कहा जानेवाला एक स्थान है। इसका निर्माण करने का मुख्य उद्देश्य यह है कि सभी भक्तजनों को भगवान के दर्शन से पूर्व गो की परिक्रमा करने का अवकाश मिलें। गो स्वयं माँ का स्परूप होती है। गो और बछडे की एक साथ परिक्रमा करना भाग्य की बात है। यहाँ पर विराजमान ठाकुर जी श्री वेणुगोपाल स्वामी की पूजा प्रतिदिन किया जाता हैं। गाय और कृष्ण के संबंध के बारे में किसको पता नहीं हैं?

इस स्थान की मुख्यता ''तुलाबार'' के कारण और भी बढ रही है। 'तुलाबार' का अर्थ भगवान को भक्त अपने वजन के समान भगवान को भेंट देने वाले वस्तुओं को समर्पित करें। यह एक प्रकार की मन्नत हैं। तीर्थयात्री भगवान को भेंट के रूप में फल, फूल, गुड, मिश्री या कोई पदार्थ को समर्पित कर सकते हैं। इन वस्तुओं का वजन भक्त के वजन के बराबर होना चाहिए।

इस मंदिर की विशेषता यह हैं कि भगवान की भेंट की वजन गाय के वजन के समान होना चाहिए। अर्थात मंदिर को दान किये गए उत्पादों को गाय के वजन के समान तौला जाता है। इस स्थान का यह प्रमुख आकर्षण है। यह 'गो तुलाबार' के नाम से प्रसिद्ध है।

## 'गुडिको गोमाता' (हर एक मंदिरों के लिए गोमाता)

यह एक प्रमुख योजना है। इसके तहत टी.टी.डी. एक स्थानीय मंदिर को एक गाय और बछड़ा दान करता है जिसके पास गो की संरक्षण करने के लिए धन हो। गाय और बछड़े को दान के रूप में देने से पहले उनके स्वास्थ्य की जांच करते है और उन्हें ट्रक में सुरक्षित रूप से मंदिरों तक ले जाते है।

## गो पूजा

ग्रामीणों को भी गाय और बछडे को दान करते है। इस प्रक्रिया का मुख्य उद्देश्य 'गो पूजा' की संस्कृति को बढ़ावा देना है। दूसरा यह है कि गो से उत्पन्न दूध और उससे तैयार किया गया दही, घी का उपयोग किया जाए। यहाँ तक कि उनका उपयोग भगवान के प्रसाद बनाने में कर सके।

टी.टी.डी. के तिरुमल श्री बालाजी मंदिर, श्री गोविंदराज स्वामी मंदिर, तिरुचानूर श्री पद्मावती देवी मंदिर में नित्य गो पूजा किया जाता है। और गाय के दूध और दही का उपयोग प्रसाद में किया जाता है। जहाँ समृद्धि की प्रतीक देशी गाय की पूजा और देखभाल की जाती है। उसे धरती पर स्वर्ग माना जाता है। टी.टी.डी. का प्रयास किसानों को गाय बांटकर गाँव को स्वर्ग बनाना हैं। सभी मानव को तिरुमल से एक संदेश - गाय का सम्मान, भारतीय संस्कृति का सम्मान है।

हाल ही में गाय आधारित गतिविधि ने प्रमुख हासिल की है। इस गतिविधि में कृषि को बढ़ावा देने के लिए गाय को वितरण करते है। टी.टी.डी. किसानों को प्राकृतिक रूप से फसल उगाने के लिए, प्रोत्साहित करती है। इसके लिए आंध्र प्रदेश मार्कफेड और कृषक साधिकारिक संस्था के साथ एक समझौता किया है, अर्थात किसान गाय के गोबर एवं मूत्र को खाद के रूप में उपयोग करे, टी.टी.डी. से गाय या बैल निःशुल्क रूप में पानेवालों को कृषक साधिकारिक संस्था पर आवेदन करना होगा। यह संस्था अपने प्रतिनिधियों को किसानों एवं पशुवों की परामर्श करने के लिए भेजेगा।

गाय अपनी अंतिम सांस तक हमारे उपयोगी है। टी.टी.डी. हमें समझाने का प्रयत्न कर रहा है कि गो में भले ही दूध देने की क्षमता न हो, परंतु उसका मूत्र एवं गोबर हमें हमेशा मिलेगा, जो अमूल्य है।

कृषि में देशी गाय या बैल का उपयोग करने का एक अंतर्निहित लाभ है। जैसे बताया गया कि टी.टी.डी. देशी गाय को ही स्वीकार करती है और किसानों को भी देशी गाय का मूत्र एवं गोबर से खेती करने को प्रोत्साहित करती है। इस प्रक्रिया के द्वारा खेती की गयी चावल, दाल, सब्जियाँ एवं फलों को टी.टी.डी. स्वीकार करती है और उन्हें मंदिर की रसोई में भगवान श्री वेंकटेश्वर को प्रसाद बनाने के लिए उपयोग करते है। यहाँ अंतिम लक्ष्य प्राकृतिक को पुनः प्रस्तुत करना है और किसानों के लिए प्राकृतिक खेती पद्धति को फिर से शुरू करना और विश्व को रासायनिक अवशेषों से मुक्त बनाना है।

टी.टी.डी. किसानों को स्वस्थ गाय दान करता है। पीडित ग्रस्थ को आश्रय प्रदान करता है। किसानों को आर्थिक रूप से तनावग्रस्थ गोशालाओं में रखी गायों को भी दान की रूप में प्रदान करती है।

**गोदान ही अतिश्रेष्ठ दान!**

# आल्वार तिरुनगरी वैभव श्री शठकोप स्वामीजी का इतिहास और महानता

- श्री चंद्रकांत घनश्याम, लाहोटी

**श्री** शठकोप स्वामीजी के अवतार के बाद तिरुक्कुरुगूर जिसे आदिक्षेत्र भी कहा जाता है तदुपरांत आल्वार तिरुनगरी के नाम से प्रसिद्ध हुआ था। अब हम श्री शठकोप स्वामीजी की महानता के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे-

भगवान आत्माओं को जो इस संसार में हैं वे वैकुंठ (भगवान का निवास स्थान जहाँ से आत्मा इस संसार में पुनः लोटकर कभी नहीं आती) प्राप्त करें यह सुनिश्चित करने के लिए बहुत कार्य करते है। ये दुनिया जब जल प्रवाह में नष्ट हो गई थी तब उसे फिर से बनाना, आत्माओं को शरीर और इंद्रियाँ प्रदान करना, उन्हें शास्त्र देना, ऋषियों द्वारा उनके अर्थों को समझाना, आत्मायें जो इस संसार से बंधी हुई हैं उनका उद्धार करने के लिये और उन्हें शास्त्रों के विषय में समझाने के लिये विभिन्न अवतार लेना ऐसे बहुत सारे कार्यों को भगवान नियोजित करते है। उन लोगों को सुधारने के लिये जो इन सब के बाद भी नहीं सुधरे हैं, जैसे एक शिकारी हिरण को फसाने के लिये दूसरे हिरण का प्रयोग करता है वैसे ही भगवान ने उन्हें सुधारने के लिये जो आत्मा पृथ्वी पर मौजूद है उनका प्रयोग करने का निश्चय किया। इन सब को मन में रखते हुए उन्होंने कुछ आत्माओं को चुना उनकी अज्ञानता को मिटाया और उन पर स्पष्ट ज्ञान बरसाया जो अज्ञानता के लेशमात्र से भी भ्रमित नहीं है। अतः आल्वारों (कुछ चुनिन्दा आत्माये जिनका यहा उल्लेख किया गया) को बिना किसी अज्ञानता के भक्ति और ज्ञान प्रदान किया। भगवान ने आल्वारों को दिव्यप्रबन्ध रचने के लिये बनाया और उनके जरिये इस संसार के सभी आत्माओं में ज्ञान को उत्पन्न करना चाहते थे, जिससे वे मोक्ष (श्रीवैकुंठ) प्राप्त करने में सक्षम बन सकें। सभी आल्वारों में श्री शठकोप स्वामीजी प्रमुख माने जाते है।

श्री शठकोप स्वामीजी को कई नामों से बुलाया जाता है जैसे मारन, शठगोपन, परान्कुश, वकुलाभरण, वकुलाभिरामन, मघिल्मारान, शटजित, कुरुगूर नम्बी।

कलियुग के प्रारंभ से कुछ दिनों में वे कारि और उदयनन्गै के पुत्र रूप में आल्वार तिरुनगरी के समीप अप्पन कोइल में वृषभ मास के विशाखा नक्षत्र के दिन अवतार लिये। कारि और उदयनन्गै के दोनों परिवार पीढ़ियों से तिरुमल के अनुयायी के भक्ति में लीन थे। कारि और उदयनन्गै तिरुक्कुरुंगुड़ी गये और तिरुक्कुरुंगुड़ी नम्भी की पूजा किये और एक बच्चे के प्राप्ति के लिये वर माँगे। भगवान ने कहा वें स्वयं उनके पुत्र रूप में अवतार लेंगे। हमने यह गुरुपरंपरा ग्रंथ में पढ़ा हैं।

जब एक बच्चा इस संसार में जन्म लेता है तब शट नाम की वायु जो अज्ञानता उत्पन्न करती है वह बच्चे को घेर लेती है। जो बच्चे की बुद्धि को गड़बड़ा देती है। ऐसी शट वायु ने श्री शठकोप स्वामीजी को भी घेरने की कोशिश की थी परंतु वह उसे दूर करने में सक्षम थे। इसलिए उन्हें शठकोप (जो शट पे गुस्सा थे) भी कहा जाता है। जन्म लेने वाले बच्चों के विपरीत श्री शठकोप स्वामीजी रोये नहीं और दूध भी नहीं पिया। उनके माता-पिता ने उन्हें तिरुक्कुरुगूर आदिनाथ भगवान के मंदिर में भेंट कर दिया और उनको एक इमली के पेड़ के नीचे छोड़ दिया जिसे तिरुप्पुली आल्वार कहा जाता है, यह निश्चय कर लिया की वह सिर्फ भगवान के लिए ही रहे। वे वहाँ पर एक तेजस्वी (चमक के साथ) रूप में, 16 साल तक शयन बिना या बिना कुछ पीये, भगवान का मनन करते हुए पद्मासन (एक बैठने की मुद्रा) में रहे।

उस वक्त एक महान ब्राह्मण श्री मधुरकवी आल्वार, जो श्री शठकोप स्वामीजी के अवतार के बहुत पहले तिरुकोलूर में अवतार ले चुके थे जो की आल्वार तिरुनगरी के नजदीक हैं, वह भारत की उत्तरीय भाग में तीर्थयात्रा पर गये थे। अलौकिक कृपा के कारण उनको दक्षिणी आसमान में चमक दिखाई पड़ी, उन्होंने उसका पीछा किया और श्री शठकोप स्वामीजी के निकट पहुँचे जो तिरुप्पुली आल्वार के नीचे दीप्तिमान होकर बैठे थे।

जैसे ही श्री शठकोप स्वामीजी ने नीचे दिये चार प्रबंधों को सुनाया श्री मधुरकवी स्वामीजी ने उन्हें अपने हाथों से ताड़ के पत्तों पर लिखा।

- तिरुविरुत्तम (ऋग्वेद का सार)
- तिरुवाशिरियम (यजुर्वेद का सार)
- पेरिय तिरुवन्दादि (अथर्ववेद का सार)
- श्रीसहस्रगीति (सामवेद का सार)

श्री शठकोप स्वामीजी के ये चार प्रबंध चारों वेदों के समान हैं। इसी कारण से उन्हें *वेदम तमिल सेय्द मारन* (मारन जिन्होंने वेदों की तमिल भाषा में रचना की) अर्थात एक वह जो कृपा से संस्कृत वेदों का अर्थ तमिल भाषा में लेकर आये। दूसरे आल्वारों के प्रबंध वेदों के सिर्फ सहायक है। अन्य आल्वारों के प्रबंध भी वेदों के सहायक ही हैं। *श्रीसहस्रगीति सभी दिव्यप्रबंधों और हमारे पूर्वाचार्यों के रहस्य ग्रन्थों का सार हैं।* भगवान कि अनुग्रह से उस श्रीसूक्ति (श्रीसहस्रगीति) पर 5 व्याख्यान उपलब्ध हैं।

आल्वार (यह पद सिर्फ श्री शठकोप स्वामीजी को ही संदर्भित करता है जब किसी विशेष आल्वार के नाम के साथ न हो) इस पृथ्वी पर 32 साल तक रहे, संसार से कोई लगाव न रखते हुये भगवान का निरंतर ध्यान करते रहे। इमली के वृक्ष के नीचे अपने स्थान पर वैसे ही रहते हुए आल्वार ने विभिन्न दिव्यदेशों के विविध भगवान का प्रबंध के जरिये मंगलाशासन (भगवान की स्तुति) किये, उसे संबंधित उस दिव्यदेश के भगवान श्री शठकोप स्वामीजी के पास आये और प्रबंधों को स्वीकार किया। इसके अलावा अपनी दिव्य दया के माध्यम से आल्वार ने दयापूर्वक सभी शास्त्रों के महान अर्थों को स्पष्ट और विस्तृत रूप से सामने लाया। तभी से वह इतनी महानता के साथ है की जब भी हम कुरुगूर का नाम सुनते है या फलश्रुति पाशुर (श्रीसहस्रगीति के हर दशक का आखरी पाशुर जो पाशुरों को पाठ करने के

लाभ को बताता है) में कुरुगूर नाम का उच्चारण करते है हमारे पूर्वाचार्यों के व्याख्यान में वे हमें आल्वार तिरुनगरी की दक्षिण दिशा में अंजली (नमस्कार के रूप में अपने हथेलियों को आपस में मिलाना) करनी चाहिये यही मार्गदर्शन करते है।

आपने अवतार के 32 वर्षों तक रहने के बाद आल्वार ने परमपद धाम जाने की इच्छा जताई। यह जानकर मधुरकवी स्वामीजी दुखी हो गये की उनके आचार्य यह संसार छोड़कर जा रहे हैं। जब की वे निरंतर श्री शठकोप स्वामीजी की पूजा करते थे, फिर भी उन्होंने आल्वार से प्रार्थना की कि वे अपना एक श्री विग्रह बनाये और उनको दे दें। श्री शठकोप स्वामीजी ने श्री मधुरकवी स्वामीजी को कहा कि अगर वह ताम्रपर्णी नदी के पानी को उबालेंगे तभी बाद में विग्रह मिलेगा। श्री मधुरकवी स्वामीजी ने उसका अनुसरण किया और विग्रह प्राप्त किया। उस विग्रह के हाथों को अंजली मुद्रा में देखकर श्री मधुरकवी आल्वार ने श्री शठकोप स्वामीजी से कहा ''दास उपदेश मुद्रा (निर्देशन देने की मुद्रा में हाथ) के साथ श्रीमान की पूजा करना चाहते थे क्योंकि श्रीमान दास के आचार्य है। इस अंजली मुद्रा का कारण क्या है?'' श्री शठकोप स्वामीजी ने उत्तर देते हुए कहा ''ये भविष्यदाचार्य (जो भविष्य में आध्यात्मिक गुरु बनने जा रहे है।) है जो चार हजार साल के बाद अवतार लेकर एक महान व्यक्ति बनेंगे।'' जो रामानुज स्वामीजी के अवतार की तरफ इशारा करते है। यह वही विग्रह है जिसे हम भविष्यदाचार्य के रूप में पूजेंगे / रामानुज चतुर्वेदीमंगलम (श्री रामानुज स्वामीजी / उडयावर की सन्निधि के आस-पास की चार सड़के) में श्री रामानुज स्वामीजी का दिव्य रूप जो आल्वार तिरुनगरी में पश्चिमी भाग में स्थित है। बाद में श्री शठकोप स्वामीजी ने श्री मधुरकवी स्वामीजी को ताम्रपर्णी नदी के पानी को फिर से उबालने का निर्देश दिया। श्री मधुरकवी स्वामीजी ने इस निर्देश का पालन किया और श्री शठकोप स्वामीजी का सुंदर दिव्य विग्रह प्राप्त किया। इस विग्रह को श्री मधुरकवी स्वामीजी ने आनंदपूर्वक स्वीकार किया, यह वही विग्रह है जिसकी हम आल्वार तिरुनगरी में प्रतिदिन पूजा करते है।

इसके बाद भगवान खुद आये और श्री शठकोप स्वामीजी को परमपद धाम लेकर गये। तत्पश्चात श्री मधुरकवी आल्वार ने श्री शठकोप स्वामीजी का विग्रह

## अलिपिरि

खूबसूरत पहाड़ी शिखरों में मंदिर-मीनारों से, शिल्पों से शोभित मंडपों से विराजमान् दिव्यधाम ही अलिपिरि है। तिरुमल पाद-पीठ तिरुमल पहाड़ पर जाते, उतरे घाट-रोड़ों, पगडंडी का केन्द्र-स्थान है।

अलिपिरि को तमिल में 'अड़िवुलि', 'अड़िपड़ि' कहके कुछ लोग पुकारते। 'अडि' कहने से पहला, 'पडि' कहने से सीढ़ी मतलब है। अडिपडि का मतलब पहली सीढ़ी है। अलिपिरि का अर्थ अल्पशरीरि भी अर्थ बताते हैं। श्री वेंकटेश्वरस्वामी यहाँ सूक्ष्म शरीर से भक्तों का अनुग्रहण करते रहते हैं।

आदिनाथ भगवान के मंदिर में स्थापित किया, सामने बड़ा दिव्य कमरा, परिसर की दीवार और मीनार बनवाया। प्रति दिन वे भिन्न भिन्न फूलों की माला बनाते, श्री शठकोप स्वामीजी के विग्रह को माला धारण कराते और हर्षित होते। वे श्री शठकोप स्वामीजी के रचित पाशुरों को कुछ इस तरह गाते की वे बहुत दूर तक यानि पूर्ण संसार में फेल गये। उन्होंने श्री शठकोप स्वामीजी पर परमानंद भक्ति के साथ कन्निनून शिरिताम्बु (पाशुरों का शीर्षक) से शुरू होने वो 11 पाशुरों की रचना किये। अभी तक श्री मधुरकवी आल्वार के वंशज आल्वार तिरुनगरी में 'अण्णावियार' इस दिव्य नाम के साथ निरंतर कैंकर्य (दिव्य सेवा) कर रहे है।

हम यहा पर काफी हद तक श्री शठकोप स्वामीजी की महानता का आनंद लेने में सक्षम हो गये है।

श्री शठकोप स्वामीजी कि तनियन-

*माता पिता युवतय स्थनया विभुथिः*
*सर्वं य देव नियमेन मद्न्वयानाम*
*आध्यस्य न कुल पथेः वकुलाभिरामं*
*श्रीमद तदंग्री युगलं प्रणमामि मुर्धना*

श्री शठकोप स्वामीजी कि वालितिरुनाम (उनके दिव्य नामों कि प्रशंसा)

*तिरुक्कुरुगैप् पेरुमाळ् तन् तिरुत्ताळगळ् वाळिये*
*तिरुवान तिरुमुगत्तुच् चेव्वि एन्रुम् वाळिये*
*इरुक्कुमोळि एन् नेञ्जिल् तेक्किनान् वाळिये*
*एन्दै एदिरासर्क्कु इरैवनार् वाळिये*
*करुक्कुळियिल् पुगावण्णम् कात्तु अरुळवोन् वाळिये*
*कासिनियिल् आरियनाय्क् काट्टिनान् वाळिये*
*वरुत्तुम् अर वन्दु एन्नै वाळिवत्तान् वाळिये*
*मधुरकवि तम्बिरान् वाळि वाळि वाळिये*
*आन तिरुविरुत्तम् नूरुम् अरुळिनान् वाळिये*
*आसिरियम् एळु पाट्टु अळित्त पिरान् वाळिये*
*ईनम् अर अन्दादि एण्बत्तु एळु ईन्दान् वाळिये*
*इलगु तिरुवाय्मोळि आयिरत्तु नूट्ट इरण्डु उरैत्तान् वाळिये*
*वान् अणियुम् मामाडक्कुरुगै मन्नन् वाळिये*
*वैगासि विसागत्तिल् वन्दु उदित्तान् वाळिये*
*सेनैयर् कोन् अवदारम् सेय्द वळ्ळल् वाळिये*
*तिरुक्कुरुगैच् चटकोपन् तिरुवडिगळ् वाळिये*
*मेदिनियिल् वैगासि विसागत्तोन् वाळिये*
*वेदत्तैच् चेन्दमिळाल् विरित्तु उरैत्तान् वाळिये*
*आदि गुरुवाय् अम्बुवियिल् अवदरित्तोन् वाळिये*
*अनवरदम् सेनैयर् कोन् अडि तोळुवोन् वाळिये*
*नादनुक्कु नालायिरम् उरैत्तान् वाळिये*
*नन् मधुरकवि वणङ्गुम् नावीरन् वाळिये*
*माधवन् पोप्पादुगैयाय् वळर्न्दरुळवोन् वाळिये*
*मगिळ् मारन् सडगोपन् वैयगत्तिल् वाळिये।*

**अगस्त-2023 महीने का क्विज-13 के समाधान**

**1)** गरुड़, **2)** अदिती और दिती,

**3)** अनूर, **4)** पार्थसारथि,

**5)** नारायण विमान, **6)** पुंडरीक पुष्करिणी,

**7)** Manilkara zapota (मनिलकरा जपोटा),

**8)** नरकासुर, **9)** सत्यभामा,

**10)** श्रीकृष्ण, **11)** वामदेव,

**12)** उद्यान-वन/बगीचा,

**13)** मारीच, **14)** पापविनाशन,

**15)** श्रीवरलक्ष्मी व्रत.

(गतांक से)

# तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

## (तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

यह जानकर कि वे आकाशराजा की पुत्री हैं, श्रीनिवास वेंकटाद्रि वापस लौटे। आते ही उन्होंने मुझे बुलाकर कहा- ''वकुलमालिका, आप तुरंत आकाशराजा की नगरी में जाइए। उनकी रानी धरणी देवी से मिलकर कहिए कि वे अपनी पुत्री का विवाह उनसे करायें। यहाँ सब कुछ ठीक कराकर मैं लौटकर उन्हें सूचना दूँगी। इसीलिए मैं यहाँ आयी हूँ। आप महाराजा से कहिएगा। उपयुक्त उत्तर पाकर मुझे बताइए। आप अपनी पुत्री से इस संबंध में बात कर सकती हैं। उनके मन की बात भी जान सकती हैं। इतना ही चाहती हूँ कि आप सब ओर से उचित समाधान पायें।''

रानी धरणी देवी का मन शांत हुआ। पद्मावती के हृदय की बात जानी। राजा से मिलीं। राजा ने अपने मंत्रियों को बुलाया। श्री वेंकटेश्वर की ओर से आई हुई वकुलमालिका की बात कही। विषय प्रस्तावित किया। सबने प्रस्तावित को स्वीकार किया और एक स्वर में कहा कि आपकी पुत्री अत्यंत भाग्यशालिनी हैं। श्री महालक्ष्मी की सहपत्नी होने का सौभाग्य उन्हें मिल रहा है। उनका जीवन आनंदमय ही रहेगा। राजा भी संतुष्ट हुए। विवाह शुभ मुहूर्त को निश्चित करने के लिए आकाशराजा ने बृहस्पति को स्मरण किया। देवलोक से देवगुरु बृहस्पति आये। उन्होंने अपनी सलाह दी कि राजकुमारी का जन्म नक्षत्र मृगशिरा (पाँचवाँ नक्षत्र) है और श्रीनिवास का श्रवणा (22वाँ) नक्षत्र। दोनों के लिए विवाह का शुभ नक्षत्र उत्तर फल्गुणी नक्षत्र ही होगा। वैशाख मास ही सब दृष्टियों से श्रेष्ठ है।

तब आकाशराजा ने वकुलमालिका की ओर मुडकर कहा- ''हे माता! आप वेंकटेश्वर से जाकर सारी बातें कहिए। विवाह का जो मुहूर्त निश्चित किया गया है, उसकी सूचना दीजिए ताकि वे अपनी तैयारियाँ आरंभ करें। समय पर यहाँ पधारें।'' इसके बाद आकाशराजा ने शुक महर्षि को आह्वानित कर उनकी ओर से वेंकटाद्रि जाने की प्रार्थना की। शुकजी वकुलमालिका के साथ वेंकटाचल गये।

तत्पश्चात् राजा ने अपने पुत्र वसुदास को बुलाया। इन्द्र और अन्य देवताओं को आमंत्रित करने उसे देवलोक

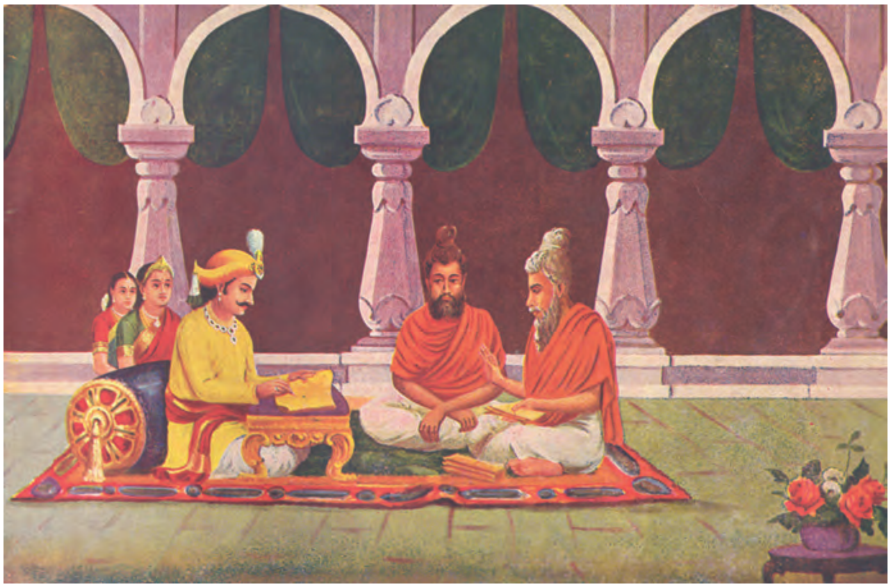

की सहगामिनी के रूप में स्वीकार कीजिएगा। मैं हमेशा आपकी सेवा में रहूँगी। आप का ही नाम स्मरण करूँगी। मैंने अपने शरीर पर आप की मुद्राएँ अंकित करा ली हैं। शंख और चक्र मुद्रांकिता हूँ मैं। मैं आपके भक्तों को ही चाहती हूँ। मैं सब काम आपके मन के अनुकूल ही करूँगी। आपकी सेवा में रत रहूँगी। कृपया मुझे स्वीकार कर अनुग्रहीत कीजिएगा।''

भेजा। राजा ने विश्वकर्मा को बुलाया। विश्वकर्मा देव लोक के शिल्पी हैं। उनसे प्रार्थना की कि वे पूरी नगरी के अलंकरण का दायित्व स्वीकार करें। उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया। इन्द्र ने आवश्यक वर्षा बरसायी। कुबेर ने धन राशियाँ उंडेली। यमधर्मराज ने सबको स्वस्थ रखने का दायित्व लिया। वरुण ने मणि-माणिक्यों की वर्षा की। फिर वे सब वेंकटाचल पहुँचे क्योंकि वहाँ की व्यवस्थाएँ भी उन्हें करनी हैं।

उधर वकुलमालिका शुक महर्षि के साथ वेंकटाचल पहुँची। वेंकटेश्वर से निवेदित किया- ''हे भगवान! आपके आदेशानुसार मैं नारायणपुर गयी। आपका कार्य सफल हो गया है। विवाह का समाचार आपको देने के लिए शुक ब्रह्मर्षि भी मेरे साथ आये हैं।''

शुक जी ने श्रीनिवास भगवान का अभिवादन किया और कहा- ''हे श्रीनिवास! पहले पद्मावती का शब्द लीजिए। उन्होंने मुझे आपसे निवेदित करने के लिए कहा है कि हे माधव! मैं भूपुत्री हूँ। मुझे आप

शुक जी के मुँह से पद्मावती की बातें सुनकर श्रीनिवास अति प्रसन्न हुए। तब शुक जी को संबोधित करते हुए श्री वेंकटेश्वर ने कहा- ''शुक जी! आप पद्मावती को बताइएगा कि मैंने उनकी प्रार्थना स्वीकार की है। विवाह के लिए ठीक समय पर मैं पहुँचूँगा। देवता समूह मेरे साथ रहेगा।'' इतना कहकर एक तुलसी माला शुकजी को दी और कहा कि इसे पद्मावती को देकर ही उन्हें समाचार देना है।

शुक जी तुलसी माला लेकर नारायणपुर पहुँचे। माला पद्मावती तक पहुँचायी गयी। पद्मावती ने

माला स्वीकार की। उसे पहनकर श्रीनिवास के आगमन का इंतजार करने लगी।

आकाशराजा को भी शुकजी ने शुभ समाचार दिया। उन्होंने चन्द्रमा से प्रार्थना की कि वे अतिथियों (ऋषियों, सामान्य प्रजा) और देवताओं के लिए आवश्यक भोजन आदि की व्यवस्था की देख रेख करें। विवाह के लिए आवश्यक कार्य निर्वहण के लिए उपयुक्त व्यक्तियों को आकाशराजा ने नियुक्त किया।

समानांतर में भगवान ने श्रीलक्ष्मी को बुलवाकर आवश्यक कार्यों का दायित्व सौंपा। लक्ष्मी जी ने परिचारिकाओं को सूचनाएँ देकर विवाह की तैयारियाँ परिपूर्ण करायीं। परिचारिकाओं ने सुगंधित तेल और गरम पानी की व्यवस्था भी की। स्वर्णाभरण और वस्त्र आदि का इंतजाम हो गया। सरस्वती और गौरी ने भी अपना अपना दायित्व निभाया। श्रीनिवास के मंगल स्नान की व्यवस्था की गयी। लक्ष्मी ने अपने हाथों से मंगल स्नान कराया। श्रीनिवास को पहनने के लिए पीतांबर वस्त्र लाये गये। श्रीनिवास वर के रूप में अलंकृत हुए। लक्ष्मी सहित वे गरुड पर आरूढ़ हुए। ब्रह्म, देवतागण, ऋषि-मुनि समूह के साथ सब नारायणपुरी की ओर बढे। मंगल वाद्य बज रहे थे। ऋषि समूह वेद मंत्र उच्चरित कर रहे थे। अलंकृत रथों में वकुलमालिका, अन्य देवता स्त्रियों और ऋषि पत्नियों सहित हो नारायणपुर के लिए निकली। वह अत्यंत वैभवपूर्ण विवाह दृश्य था।

समरूप से नारायणपुरी में पद्मावती को प्रदक्षिणम् मार्ग से समुचित रूप में वधू बनाकर ऐरावत पर बिठाया गया। नारायणपुरी की नगर वीथियों से पुरद्वार तक वर के स्वागत के लिए जुलूस में चलकर सब पहुँचे। वर और वधू वहाँ मिले। वर और वधू पक्षवालों का एक-दूसरे के साथ परिचय हुआ। वहाँ पर निर्मित मंगल-मंटप में सब विराजित हुए। ब्रह्म स्वयं पुरोहित बने। शुभ मुहूर्त में शास्त्र विधि से सब मांगलिक विधियाँ (होमादि) संपन्न की गयीं। शुभ मुहूर्त में मंगल सूत्र धारण हुआ। तत्पश्चात् अन्य वैवाहिक परंपराएँ चार दिन पर्यन्त धूमधाम से चलायी गयीं।

विवाह के बाद आकाशराजा की अनुमति से पद्मावती और श्रीनिवास श्रीलक्ष्मी के साथ गरुड पर आरूढ़ होकर वेंकटाद्रि पहुँचे। रास्ते भर में देव दुंदुभियाँ बजती रहीं। ब्रह्म की अगुवानी में ऋषि, मुनि, देवता समूह सब श्रीगिरि पहुँचे थे। श्रीनिवास पद्मावती सहित मणि मंटप में पधारे। श्रीलक्ष्मी और पद्मावती समेत श्रीनिवास सिंहासन पर विराजमान हुए।

आकाशराजा भी वधु पद्मावती देवी के साथ सहज परंपरा के अनुरूप चावल, दाल, शक्कर, फल आदि लेकर आये। वज्र, आभरण, मोतियाँ आदि को भी भेंट के रूप साथ लाकर पुत्री और दामाद को समर्पित किया। सभी भेंट उनकी ओहदा और वैभव के अनुरूप ही थीं। यह विवाह सामान्य विवाह नहीं बल्कि आकाशराजा

सम्राट की पुत्री का था और श्री वेंकटेश्वर भगवान वर थे। वेंकटेश जी ने ससुर का उपयुक्त रूप से सम्मान किया और कन्यादान करने तथा अमूल्य पुरस्कार प्रदान करने के लिए धन्यवाद देते हुए कृतज्ञता ज्ञापित की। आकाशराजा ने उत्तर में दामाद से कहा- ''हे श्रीनिवास! आप तो भगवान हैं। यह मेरा सौभाग्य है कि मैं आपका ससुर बन गया। अब मेरी कोई कामना रह नहीं गयी। एक ही इच्छा है हमेशा हमेशा मैं आपका भक्त बनकर ही रहूँ। आपका यह वरदान मेरे लिए अनमोल ही होगा। मुझे थोडी जगह चाहिए आपके हृदय में, बस। इससे मैं अपना ध्यान आप की ओर केन्द्रित रख सकता हूँ।'' भगवान ने अपने ससुर को तो वर दे ही दिया। वे संतुष्ट हुए। भगवान ने उन्हें भक्त के रूप में ही नहीं ससुर के रूप में भी समादृत किया।

ब्रह्म और अन्य अतिथि भगवान के विवाह के लिए वेंकटाद्रि आये थे। उनकी ओर भी श्रीनिवास ने ध्यान दिया। उनका समुचित रूप से सत्कार किया। फिर उन्हें अपने अपने स्थानों पर जाने की अनुमति भी दी। सब लोगों के जाने के बाद श्रीलक्ष्मी और पद्मावती के साथ श्रीनिवास ने विलास-विहार किया। इसके उपरांत वे मंदिर में पहुँचे।

(वराह पुराण अध्याय II, सं. 440 में वेंकटेश्वर के श्रीलक्ष्मी और पद्मावती के साथ रहने की गाथा है तो भविष्योत्तर पुराण में आकाशराजा से पुरस्कृत होकर अगस्त्याश्रम में रहने की बात है। वे वहाँ छः महीने रहें। क्योंकि विवाह के बाद छः महीने तक पर्वत शिखरों पर वर को चढना नहीं चाहिए। यह एक प्रथा है। उन्होंने इसके लिए प्रतिज्ञा ली थी। आजकल भी यह प्रथा इस प्रांत में है।)

**दसवाँ अध्याय समाप्त।**

(गतांक से)

# श्री वेंकटाचल की महिमा

## (हिंदी गद्यानुवाद)

### द्वितीय आश्वास

*तेलुगु मूल*
*मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा*

*हिंदी अनुवाद*
*आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी*

### श्रीहरि के द्वारा दिया गया संदेश :

ब्रह्म की इन बातों को सुनकर श्रीहरि ने इस रूप में कहा। ''तुम्हारी बातें मुझे सम्मत हैं। अब मेरा एक विचार है। उसे सुनो। मुझ पर विश्वास करके भक्ति के साथ रहनेवाले साधुओं को सतानेवाले को मैं निश्चय रूप से विरोध करूँगा। मेरी निंदा करने से मैं सहूँगा। अपने भक्तों की निंदा को मैं सहन नहीं कर सकूँगा। जय, विजय के द्वारा सनकसनंदादि का किया गया जो अपमान छोटा होने पर भी उन्हें मैंने संहार किया। उसी रूप में आगे भी मैं अपने भक्ति की रक्षा करता रहूँगा। भागवतपचार महा पाप है। इसलिए ऐसे पाप को जानबूझ कर करनेवालों को मैं नरक भेजूंगा। उन की रक्षा मैं किसी भी रूप में नहीं करूँगा। इससे अलग अनेक याग करके मेरे पास आकर मेरी शरण में आनेवाले दीनजनों का उद्धार मैं करूँगा। हे पद्मजा! मेरे भक्तों की निंदा करनेवालों को, गुरु दूषकों को, विश्वास करनेवालों को धोखा देनेवालों को मैं नरक भेजूंगा। उन का उद्धार किसी भी रूप में नहीं करूँगा।

अतिशय दंभ करनेवाले, दर्प-अभिमान करनेवाले, दुराचारी, घोर दुराग्रह का अनुसरण करनेवाले सजा पाने योग्य हैं। उन सब को मैं बाधाएँ पहुँचाऊँगा। धरती पर ऐसे पापात्माओं को मैं ही सजा दूंगा। दुष्टों का संहार करके शिष्ट जो बलहीन है, उन की रक्षा करने के लिए ही मैं शेषाचल पर ही वास करूँगा। अब तुम सत्य लोक लौट कर संकट मुक्त होकर सृष्टि करते रहो। तुम पर सदा मैं अनुग्रह करता रहूँगा।

अब हे पुत्र! अपने लोक के लिए निकलो।'' कहते ब्रह्म के लिए आज्ञा देकर इंद्र से श्रीहरि ने इस रूप में कहा। ''हे देवेंद्र! तुम देवतागणों के साथ अपना लोक जाकर अपने बल को बढा कर तीनों लोकों पर राज करो! आगे दैत्यों से डर कर विचलित मत हो! तुम्हें जय हो। शांति से रहो हे सुराधिनायक!'' इस रूप में इंद्र को आज्ञा देकर स्नेह से शिव की ओर देखकर मुस्कराते स्नेह भाव से इस रूप में कहा। ''हे गौरी नायक! मेरे महोत्सव का संकल्प करके आप सब ने यहाँ पर आकर इस महोत्सव में आनंद से भाग लिया। मुझे बहुत आनंद हुआ

है। अब तुम अपने कैलास जाकर वहाँ पर पहले की तरह अपने भक्त वृंदों की देखभाल करो।

हे शंकर! वैकुंठ से बढ कर, क्षीरसागर से भी बढ कर, सूर्य मंडल से भी बढ कर, धन्य श्वेत द्वीप से भी बढ कर शेषाचल पर्वत विशेष महिमावान है। यह भूलोक वैकुंठ की तरह प्रचलित हुआ है। इसलिए मैं यहीं रहूँगा। यहाँ से पूरब की दिशा में सुवर्णमुखी तट पर तुम वास करो। वह भूलोक कैलास के रूप में प्रचलित हो जायेगा। तुम वहाँ वास करो।'' इस रूप में कहते तदूपरांत अगस्त्य की ओर देखकर आदरता से इस रूप में हरि ने कहा। ''हे परम पावन! कुंभसंभव! महात्मा! जो स्थल आप को पसंद है वहाँ आप बसिए।''

ऐसे कहते मुनियों की तरफ देखकर हरि ने इस रूप में कहा। ''हे योगीश्वर मुनिगण! आप लोग विराग की महिमा को जान कर ज्ञानामृत पीकर सदा तृप्त रहते हुए स्वेच्छा से विहार करते रहिए।'' ऐसा आनंद से चक्रधर ने कहा।

तब ब्रह्म, इंद्र, रुद्र, कुंभ संभव, सनकसनंदादि को इस रूप में आज्ञा दे कर श्रीदेवी, भूदेवी और नीलादेवी समेत श्रीहरि ने अंतर्विमान में प्रवेश किया। तब ब्रह्म हंस पर आरूढ़ होकर सत्य लोक गए। इंद्र ऐरावत पर चढ कर इंद्र लोक गए। रुद्र नंदि वाहन पर आरूढ़ होकर शेषगिरि की दक्षिण दिशा में कपिलतीर्थ की ओर से निकल कर कैलास चले गए। अगस्त्य आदि प्रमुख मुनिगण, सनकसनंदादि प्रमुख योगीश्वर स्वामिपुष्करिणी की उत्तर दिशा में रहनेवाले पापविनाशन तीर्थादि तीर्थों में पुण्य स्नान करते अपने पापों को नष्ट करते हुए फाल्गुण मास

के शुद्ध पौर्णमी तिथि के दिन पुण्य तीर्थ तुंबुरकोनतीर्थ के समीप लक्ष्मी को लेकर अरुंधती के द्वारा तप करके वरदान प्राप्त करनेवाले पुण्य सरोवर तीर्थ के तट पर बस कर तप करने लगे। वहाँ कुछ मुनिगण और कुछ पुण्यतीर्थों का आश्रय लेकर तप करने लगे। यह ब्रह्मोत्सव का क्रम है।

**फल श्रुति :**

'इस ब्रह्मोत्सव के बारे में लिखने से, पढने से, सुनने से लोगों को आयुरारोग्य और ऐश्वर्य आदि प्राप्त हांगे।' ऐसा कहने पर सुन कर सूत को देखकर शौनकादि मुनियों ने इस रूप में कहा।

**आश्वांत :**

हे सुंदर विग्रह! घनतर मंदर गिरिधर! समस्त मौनि हृदाब्जानंद कर! वेंकटाचल मंदिर! सुरराजु विनुत! मायातीता!

हे सुरचिर गुणहारा! शुभ्रकीर्ति प्रचारा! वरजलधि गंभीरा! वासवारि प्रहारा! दुरितचय विदारा! दुःख संसार दूरा! गुरुतर गिरिधीरा! क्रूर गर्वापहारा!

यह तरिगोंडा श्री लक्ष्मी नृसिंह करुणा-कटाक्ष से कलित काव्य विचित्र वसिष्ठ गोत्र पवित्र कृष्णयामात्यानुभव वेंगमांबा प्रणीत श्री वेंकटाचल माहात्म्य के वराहपुराण में देवेंद्रादि प्रमुख क्षीराब्धि के पास श्रीहरि की खोज करना, तदूपरांत नारद से प्रेरित होकर ब्रह्मलोक को जाना, ब्रह्म के साथ देवेंद्रादि मिल कर हरि की खोज करने वेंकटाचल पर्वत पर चढना, दशरथ अपने गुरु वसिष्ठ के साथ वेंकटाद्री पर आना।

पुष्करिणी के तट पर ब्रह्मादि का तप करना, श्री वेंकटेश्वर विमान समेत ब्रह्मादि को दर्शन देना, ब्रह्मादि के द्वारा स्वामी को विनति सुनाना, हरि प्रसन्न होकर ब्रह्मादि से संवाद करना, दशरथ के द्वारा हरि की स्तुति करना, श्रीनिवास के द्वारा दशरथ को वरदान देकर अयोध्या भेजना, ब्रह्मोत्सवों का क्रम आदि कथा सहित यह द्वितीय आश्वास समाप्त है।

**द्वितीय आश्वास समाप्त**

## पादालमंडप

यहाँ के (पादालमंडप) पादों के मंडप में श्रीस्वामीजी के लोह-पादों को भक्तलोग अपने शिर पर धर कर भक्ति से गर्भालय की प्रदक्षिणा करते हैं।

# सीताफल के आरोग्य में लाभ (कस्टर्ड सेब)

- डॉ.सुमा जोषि

**सी**ताफल का Latin Name है - Annona Squamose यह Annonaceae कुटुम्ब से है। यह उष्णकटिबन्धीय अमेरिका और भारत का मूल निवासी एक छोटा पेड है। यह दुनिया भर में वितरित है और दक्षिण और मध्य अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और आफ्रीका में पाया जाता है और अब इसकी खेती फिलीपीस, एशिया और वेस्ट इण्डीज में की जाती है। अब पूरे भारत में इसकी खेती की जाती है।

यह पेड 3 से 8 मीटर तक बढ़ता है। पत्तियाँ - 6 to 9 cm सरल और विपरीत लांसोलेट होते हैं। फूल 3 cm लम्बा और हमेशा तीन पंखुडियों वाला होते हैं। फल-मांसल और कई आयताकार बीजयुक्त होते हैं। फल की सतह पर गोल-गोल धब्बे दिखाई देते हैं।

**समानार्थी शब्द -** गंडगात्र, सीताफल।

**विभिन्न भारतीय भाषाओं में नाम -** अंग्रेजी-कस्टर्ड एप्पल, शुगर एप्पल, स्वीट-सॉप। हिन्दी-सीताफल; कन्नड-सीताफला; तेलुगु-सीताफलम्; यूनानी-शरीफा; संस्कृत-सीताफलम्; मलयालम-सीताफलम्, अट्टाका; तमिल-सीताफलम।

**रासायनिक संगठन -** क्विनोलिन, स्क्वैमोन, बुलैटासिनोन

**आयुर्वेदिक गुणधर्म -** रस-मधुर (मीठा); गुण-हलका, चिपचिपा; वीर्य-ठण्डा; पाचन के अंत में स्वाद-मीठा; दोषहर-वातपित्तशामक एवं कफ कारक।

**प्रयुक्त भाग -** छाल, पत्ती, फल।

**औषध मात्रा -** पत्तों का रस-10 to 15 ml, पाउडर-2 to 4 grms, काढ़ा-50 to 100 ml.

**सीताफल के औषधीय उपयोग -** पत्तियाँ और बीज कृमिनाशक और सूजनरोधी होते हैं। सिर से जूँ खत्म करने के लिए पत्तियाँ के पेस्ट का उपयोग किया जाता है। जूँ को खत्म करने के लिए सीताफल के बीज का पाउडर का उपयोग किया जा सकता है। पाउडर में कुछ एसे गुण होते हैं जो जूँ के संक्रमण के खिलाफ प्रभावी होते हैं। इसको मुहांसों और फुंसियों को रोकने, सीबम (तेल) उत्पादन को कम करने और त्वचा के छिद्रों को साफ करने में मददगार पाया गया है। यह त्वचा को अधिक चमकदार और चिकनी बना सकता है।

विभिन्न प्रयोगशाला अध्ययनों से पता चला है कि सीताफल अपने कच्चे अर्क और पृथक यौगिकों के रूप में कैंसरविरोधी गतिविधि दिखा सकता है। सीताफल विटामिन ए और सी का एक बहुत समृद्ध स्रोत है जो भ्रूण के विकास में मदद कर सकता है। यह गर्भपात के खतरे को भी कम कर सकता है, प्रसव के दौरान प्रसव पीडा को कम कर सकता है और प्रसव के बाद स्तन के दूध का उत्पादन बढ़ा सकता है। यह त्वचा, आंखों, बालों और भ्रूण के रक्त-संबंधित ऊतकों के विकास के लिए भी उत्कृष्ण है। गर्भावस्था के दौरान इसके लाभों के लिए सीताफल का उपयोग करने से पहले, आगे के मार्गदर्शन के लिए अपने स्वास्थ्य सेवा प्रदाता से परामर्श लें। सीताफल के नियमित सेवन से शरीर की पाचन प्रक्रिया को बेहतर बनाया जा सकता है क्योंकि इसमें फाइबर प्रचुर मात्रा में होता है जो शरीर की पाचन क्रिया को बेहतर बनाता है और लोगों को कब्ज की समस्या से राहत दिलाने का काम करता है।

चूँकि सीताफल को बेहतर ऊर्जा स्रोतवाला फल माना जाता है, यह वजन बढ़ाने में सहायता कर सकता है। इसलिए, स्वस्थ शरीर के वजन के लिए सीताफल एक अच्छा विकल्प है। इसमें कैल्शियम और मैग्नीशियम दोनों होते हैं जो शरीर के स्वस्थ रक्तचाप को त्वनाए रखने का काम करते हैं। इसलिए उच्च रक्तचाप से (High Blood Pressure) पीडित लोगों को कस्टर्ड सेब का सेवन करना चाहिए। ऐसा करने से उच्च रक्तचाप के कारण होनेवाले हृदयरोग और स्ट्रोक के खतरे को भी कम किया जा सकता है।

कस्टर्ड सेब का सेवन अनावश्यक कोलोस्ट्रॉल के लिए एक उत्कृष्ट उपाय साबित हो सकता है क्योंकि इसमें नियासिन विटामिन मौजूद होता है जो शरीर में कोलेस्ट्रॉल के स्तर को सन्तुलित करके हृदयरोग, स्ट्रोक और दिल के दौरे के खतरे को कम करने का काम करता है। कस्टर्ड सेब में मधुमेह विरोधी गुण होते हैं जो शरीर में रक्त शर्करा के स्तर को बेहतर बनाने और मधुमेह से जुडे खतरों को कम करने में मदद करते हैं। इसलिए डायबिटीज में कस्टर्ड सेब का सेवन करना अच्छा होता है।

कुछ लोगों को असहनीय तनाव के कारण बेहोशी के दौरे पडने लगते हैं। अगर सीताफल की पत्तियों को कुचलकर पीडित व्यक्ति की नाक के पास रखा जाए तो वह तुरंत होश में आ जाता है। सीताफल में मौजूद मैग्नीशियम शरीर में तरल पदार्थ और इलेक्ट्रो-लाइट्स का स्वस्थ संतुलन बनाए रखता है। यह जोडों में मौजूद अतिरिक्त तरल पदार्थ और एसिड को हटा देता है जिससे सूजन होती है। अंतिम परिणाम गठिया और गठिया के जोखिम को कम करता है।

सूखे सीताफल का गूदा लें। इसे पीसकर घरेलू पाउडर बना लें। इस चूर्ण को $^1/_4$ से $^1/_2$ चम्मच की मात्रा में सुबह-शाम पानी के साथ लेने से दस्त से छुटकारा मिलता है। सीताफल फोडे या अल्सर को प्रबन्धित करने में मदद करता है। $^1/_2$ - 1 चम्मच कस्टर्ड एप्पल का पाउडर लें। पानी में मिलाकर प्रभावित जगह पर लगाँए। फोडे-फुंसियों को प्रबंधित करने के लिए इस प्रक्रिया को अगले दिन दोहराँए।

## सीताफल के दुष्प्रभाव

चूंकि सीताफल में उच्च मात्रा में आयरन होता है, इसलिए इसके अधिक सेवन से मतली, उल्टी और पेट फूलने जैसी समस्याएँ हो सकती हैं। सीताफल में फाइबर प्रचुर मात्रा में होता है, इसलिए इसके अधिक सेवन से दस्त, गैस, आंतों में जकडन जैसी पेट संबंधी समस्याएँ हो सकती हैं। इससे एलर्जीवाले लोगों को इसके सेवन से बचना चाहिए। सीताफल का सेवन करते समय इसके बीजों से परहेज करना चाहिए, नहीं तो यह गले में फंस सकता है।

इन फलों का एक साथ बहुत अधिक सेवन करने से शरीर में अतिरिक्त वसा और अस्वास्थ्यकर वजन बढ़ सकता है। त्वचा और मुख्य रूप से सीताफल के बीजों में जहरीले यौगिक होते हैं जो लालिमा, त्वचा में एलर्जी और आंखों को नुकसान जैसी गंभीर जटिलताओं का कारण बन सकता है। सावधानी से इसका सेवन करें। भारतीय पौराणिक कथाओं के अनुसार, वन में निवास के दौरान सीता ने राम को यह फल उपहार में दिये थे। इसलिए ‘सीताफल’ नाम पड़ा। स्वस्थ रहें सुरक्षित रहें।

# अक्तूबर महीने का राशिफल

**- डॉ.केशव मिश्र**

**मेष राशि -** यह माह आपके लिए उत्तम फलदायक रहेगा। रोग-ऋण मुक्ति, सामान्य सुख लाभ, शत्रुपक्ष कमजोर रहेगा, व्यापार-उद्योग धन्धों में पूर्ण लाभ। विद्य-बौदि्धक विकास, नौकरी में भरपूर उल्लास। धन लाभ। मित्रों का पूर्ण सहयोग, गृह कार्यों में प्रगति, अपनों का सहयोग बना रहेगा।

**वृषभ राशि -** मास फल उत्तम रहेगा। आपके मन में शुभ विचारों का उदय होगा। धैर्य रखने से काम बढ़ेगा। छात्रों के लिए प्रतियोगी क्षेत्रों में अनेकानेक लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। श्रमिकफल प्राप्त होंगे, व्यापारिक प्रगति। राजकीय सहयोग, सगे संबंधियों से अच्छे संबंध बना कर रखे जिससे सुख आनंद की प्राप्ति होगी।

**मिथुन राशि -** शरीर उत्तम बना रहेगा। दाम्पत्य सुख प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति मजबूत बनी रहेगी। मित्रों का सहयोग बना रहेगा। उद्योग-व्यापार, कार्य क्षेत्रों में प्रगति। परिवार में अपनों का सहयोग, विघ्न-बाधाओं का शमन। संतान कष्ट, श्रेष्ठजनों का सहयोग, धार्मिक-सामाजिक कार्यों में अभिरुचि।

**कर्कटक राशि -** यह माह आपके लिए उत्तम सिद्ध होगा। सकारात्मक परिवर्तन, लाभ के अनेकानेक अवसर प्राप्त होंगे। रचनात्मक कार्यों में अभिरुचि, गृहस्थ जीवन सुखमय रहेगा। सामाजिक कार्यों में व्यस्तता, मानसिक-बौदि्धक विकास। शुभ कार्यों में धन खर्चा।

**सिंह राशि -** आरोग्य सुख, नियमित दिनचर्या बना रहेगा। जिससे मन प्रसन्न रहेगा। आर्थिक संतुलन बना रहेगा। सामयिक कार्यों में सफलता। उच्च पदाधिकारियों से अच्छे संबंध होने के कारण नौकरी में पदोन्नति, आर्थिक लाभ, दांपत्य सुख उत्तम रहेगा।

**कन्या राशि -** आप अपने मनोबल को मजबूत बना कर रखे जिससे हर कार्य में प्रगति होगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, आत्म विश्वास में वृद्धि, अभिष्टकार्य सिद्धि। निर्माण कार्यों में रुचि बढ़ेगी। आपके मन में शुभ विचारों का उदय होगा, कार्य क्षेत्र का विस्तार होगा। अपनों का सुख बना रहेगा। रोजगार में वृद्धि। धन लाभ, दांपत्य जीवन सुखमय रहेगा।

**तुला राशि -** शारीरिक कष्ट, दुर्बलता से परेशान होंगे। आर्थिक कष्ट। अपने वाणि व्यवहार पर नियंत्रण रखे जिससे कार्यक्षेत्रों में अपनों का सहयोग प्राप्त होंगे जिससे स्थिति मजबूत बनी रहेगी। कुटुम्बिक चिंता, संतान पक्ष की चिंता रहेगी। व्यापार में श्रमपूर्ण सफलता।

**वृश्चिक राशि -** शारीरिक - आर्थिक कष्ट जिससे मन खिन्न रहेगा। तनाव, वाद-विवाद से परेशानी, उच्चलोगों से संपर्क। कार्य क्षेत्र में लाभ से अधिक धन खर्च। व्यवसायिक कार्य में प्रगति। संतान कष्ट, मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। नेत्र विकार, यत्र तत्र व्यर्थ भ्रमण जिससे मन खिन्न होगा और धन खर्च होंगे।

**धनुष राशि -** यह माह आपके लिए उत्तम रहेगा। दैनन्दिन जीवन सन्तुलित और सुखानुभूति वाला रहेगा। शरीर स्वस्थ जिससे मन प्रसन्न रहेगा। आर्थिक लाभ, संवाद से हर्ष। छात्रों के लिए शैक्षिक विकास, कार्यों में प्रगति। नौकरी सुखद।

**मकर राशि -** यह माह आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा। क्रोध के कारण तनाव, वाद-विवाद से मानसिक कष्ट। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। आर्थिक स्थिति मध्यम रहेगा। रचनात्मक कार्यों में अनुकूलता, अध्ययन-अध्यापन कार्यों में प्रगति। कौटुम्बिक सुख, व्यापारिक कार्यों में लाभ।

**कुंभ राशि -** स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पूर्व समस्याओं का समाधान, आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। अपनों का भरपूर सहयोग, पुत्र-दाम्पत्य सुख। पारिवारिक दायित्व का निर्वहन, प्रेम सम्बन्ध में मजबूति, उद्योग-व्यापार में सफलता मिलेगी।

**मीन राशि -** अव्यवस्थित दिनचर्या होने के कारण नित्यकर्मों में व्यवधान उत्पन्न होंगे। स्वास्थ्य चिन्ता, वायु-उदर विकार जिससे अनावश्यक मानसिक तनाव, अपनों का असहयोग। आर्थिक परेशानी, कार्य क्षेत्र में असफलता, आये से अधिक व्यय। पारिवारिक कलह, पुत्र-पत्नी से कष्ट। शत्रुओं से सावधान। यात्रा से बचकर रहें अन्यथा व्यर्थ भ्रमण होगा।

# बुद्धि का बल

*- श्रीमती प्रेमा रामनाथन*

एक गाँव में बुनिया नामक एक किसान रहता था। वह बडा परिश्रमी और बुद्धिमान था। वह भगवान विष्णु का बडा भक्त भी था। हर दिन अपने खेत में काम आरंभ करने से पहले वह विष्णु का नाम स्मरण करता था। उसका विश्वास था कि भगवान की कृपा से ही हमें यह जीवन प्राप्त हुआ है। वह अपने खेत में जो कुछ मिलता था उसमें से एक भाग गरीबों को दान में देता था। इसलिए गाँव भर में उसके प्रति बडा आदर था।

एक दिन राजा चंद्रसेन उस गाँव में आये थे। तब उनको किसान बुनिया के बारे में बताया गया। राजा उसे देखना चाहते थे। इसलिए उन्होंने अपने एक सैनिक के द्वारा अपने दरबार में मिलने के लिए कहा। राजा की यह खबर सुनकर किसान बुनिया अत्यंत खुश हुआ। उसने यही सोचा कि ये सब भगवान विष्णु की महिमा है।

नियत दिन किसान राजा से मिलने उसके दरबार में गया। राजा ने उसका स्वागत किया। उसके बाद राजा ने उसके बारे में बताने को कहा। तब किसान ने इतना ही कहा कि मैं एक गरीब किसान हूँ। भगवान विष्णु की दया से मेरा हर दिन बीत रहा है। तब राजा ने पूछा कि तुम खेत में अपने परिश्रम से मिलने वाले दाने को क्यों दान कर रहे हो इसका उत्तर देते हुए बुनिया ने कहा, ''महाराज! मैं एक गरीब किसान हूँ। मेरे पास खेती करने के लिए थोडी सी जमीन है। इसलिए मैं खेती करता हूँ। लेकिन मेरे गाँव में अनेक गरीब रहते हैं और उनके पास खेती करने के लिए कोई जमीन नहीं है। वे बिना अन्न अपना जीवन कैसे बितायेंगे? भगवान विष्णु ने मुझे जो खेत दी है उसमें से मिलने वाले दाने में थोडा मैं उन गरीबों के लिए भी दान करता हूँ। यह कार्य भगवान विष्णु मुझसे करवाते हैं। इसलिए मैं ऐसा करता हूँ।''

बुनिया की बुद्धिमत्ता और सेवाभाव को देखकर राजा का मन खुश हुआ। उन्होंने उसकी ऐसी सेवा का सम्मान करते हुए एक बहुमूल्य रत्न को भेंट में दिया। भेंट पाकर किसान बुनिया बहुत खुशी से गाँव लौट रहा था। तब उसे बीच में एक जंगल को पार करना था। जंगल में चलते

समय तीन डाकुओं ने उसे घेर लिया और उसके पास से राजा द्वारा भेंट में दिये गये रत्न को देने के लिए मजबूर करने लगे। उनको देखकर पहले किसान डरने लगा। फिर उसने भगवान विष्णु का नाम स्मरण किया। तब उसके मन में एक उपाय सूझ उठा। उसके अनुसार बुद्धिमान बुनिया ने उनको देखकर कहा कि इस रत्न का मूल्य अत्यधिक है। इसे बेचकर मैं अपने गाँव में बडा खेत खरीदने वाला हूँ। इसे मेरे पास ही रहने दो। यदि मैं इसे तुममें से एक को दूँ तो उसकी मृत्यु हो जायेगी।

मैं ऐसा बुरा कार्य करना नहीं चाहता। इसलिए मैं यह रत्न कैसे दे सकता हूँ। तुम लोगों की भलाई के लिए इसे मेरे पास ही रहने देना।

किसान की बात सुनकर तीनों डाकुओं ने सोचा कि वह चालाकी कर रहा है। इसलिए अब तीनों डाकुओं में उस बहुमूल्य रत्न को पाने की लालच पैदा हो गयी। वे उसे किसी न किसी तरह ले लेना चाहते थे। इसलिए उन डाकुओंने कहा अरे, हम तो तुम्हारे साथ चल रहे हैं। हममें से एक की मृत्यु कैसे होगी झूठ मत बोलो और रत्न मेरे हाथ दे दो। अब बुनिया को अपने हाथ के रत्न को उनके हाथ दिये बिना बचना असंभव सा हो गया। इसलिए बुनिया ने उस रत्न को एक के हाथ में दे दिया। रत्न को हाथ में लेते ही वह डाकू वहाँ से तेज भागने लगा।

उसको दौडते देखकर बाकी दोनों डाकू उसका पीछा करने लगे। तब तक एक डाकू ने अपनी छुरी से दौडते उस डाकू को मार दिया और वह उसी स्थान पर मर गया। अब वह दूसरा डाकू उसके हाथ से रत्न को लेकर भाग जाने का प्रयास करने लगा। यह देखकर तीसरे डाकू ने उसे जोर से मारा। इससे दोनों डाकुओं के बीच में बडी लडाई हुई।

लडाई के अंत में उनमें से एक का पाँव टूट गया और दूसरा गड्डे में गिर गया। वे दोनों आपस की लडाई के कारण बहुत कमजोर हो गये और अधिक थक गये। यह देखकर किसान बुनिया ने डाकू के हाथ से रत्न को लेकर अपने गाँव पहुँचा। इस प्रकार वह अपनी 'बुद्धि के बल' से बडे खतरे को भी जीत लिया।

## तलयेरुगुंडु

वाग्गेयकार ताल्लपाका अन्नमय्या ने भी इस तलयेरुगुंडु को छूकर परवश हुआ था। इसी को 'तलताकिडिगुंडु' कहते हैं। यह एक स्वस्थता-शिला है। स्वस्थता का चिह्न। पहाड़ की सीढ़ियाँ चढ़कर उतरने वाले यात्री अपने पाँव, सिर की बाधाओं के निवारणहेतु, उन-उन अंगों को इस शिला के उन-उन प्रदेशों में रगड़ने से, बाधाओं का निवारण हो जाने में भक्तों का विश्वास है।

चित्रकथा

# जल दान का महत्व


तेलुगु मूल - डॉ.के.रविचंद्रन्
अनुवादक - डॉ.एम.रजनी
चित्रकार - श्री टी.शिवाजी

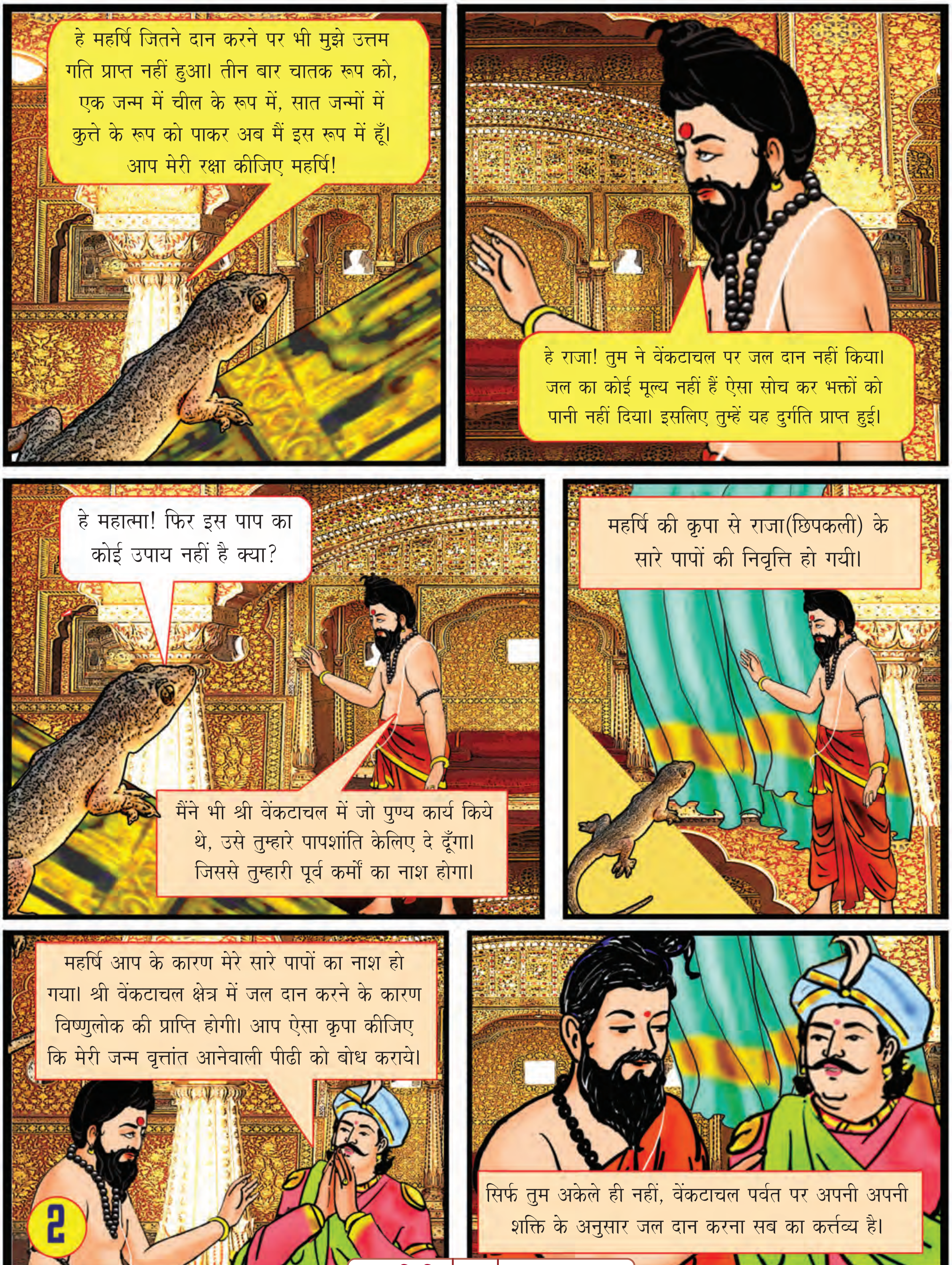

हे महर्षि जितने दान करने पर भी मुझे उत्तम गति प्राप्त नहीं हुआ। तीन बार चातक रूप को, एक जन्म में चील के रूप में, सात जन्मों में कुत्ते के रूप को पाकर अब मैं इस रूप में हूँ। आप मेरी रक्षा कीजिए महर्षि!
हे राजा! तुम ने वेंकटाचल पर जल दान नहीं किया। जल का कोई मूल्य नहीं हैं ऐसा सोच कर भक्तों को पानी नहीं दिया। इसलिए तुम्हें यह दुर्गति प्राप्त हुई।
हे महात्मा! फिर इस पाप का कोई उपाय नहीं है क्या?
मैंने भी श्री वेंकटाचल में जो पुण्य कार्य किये थे, उसे तुम्हारे पापशांति केलिए दे दूँगा। जिससे तुम्हारी पूर्व कर्मों का नाश होगा।
महर्षि की कृपा से राजा(छिपकली) के सारे पापों की निवृत्ति हो गयी।
महर्षि आप के कारण मेरे सारे पापों का नाश हो गया। श्री वेंकटाचल क्षेत्र में जल दान करने के कारण विष्णुलोक की प्राप्ति होगी। आप ऐसा कृपा कीजिए कि मेरी जन्म वृत्तांत आनेवाली पीढी को बोध कराये।
2
सिर्फ तुम अकेले ही नहीं, वेंकटाचल पर्वत पर अपनी अपनी शक्ति के अनुसार जल दान करना सब का कर्त्तव्य है।

## तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

### प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।
2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।
3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।
4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।
5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजनल या जिराक्स प्रति मान्य है।
6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।
7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र **इस महीने का 25वाँ तारीख** के अंदर पहुँचाने की अंतिम तिथि है।
8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।
9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।
10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।
11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।
12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

**प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-**
प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे. प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम.............................................
लिंग/आयु..........., चंदा नंबर.......................
पता....................................................
.........................................................
मोबाइल नं..............................................

## क्विज-15

**1) भूलोक वैकुंठ या कलियुग वैकुंठ के नाम से पुकारने वाले मंदिर का नाम क्या है?**
ज).........................................................
**2) आकाशराज की पुत्री का नाम क्या है?**
ज).........................................................
**3) रानी धरणी देवी का पति का नाम क्या है?**
ज).........................................................
**4) देवलोक के शिल्पी का नाम क्या है?**
ज).........................................................
**5) देवताओं के गुरु का नाम क्या है?**
ज).........................................................
**6) श्रीनिवास के माता का नाम क्या है?**
ज).........................................................
**7) अगस्त्याश्रम में कितने महीने तक पद्मावती-श्रीनिवास ने वास किया?**
ज) .......................................................
**8) महाराज श्रुतकीर्ति के घर में छिपकली के रूप में जन्मित महाराज का नाम क्या है?**
ज) .......................................................
**9) देवीनवरात्रि के समय में तीसरे दिन किस देवी माँ का आराधन करते हैं?**
ज).......................................................
**10) दुर्गादेवी का आठवाँ रूप क्या है?**
ज).......................................................
**11) केसरी नामक कपिराजा का पत्नि का नाम क्या है?**
ज).......................................................
**12) अंजना देवी के गर्भ में पैदा हुआ महा पुरुष का नाम क्या है?**
ज).........................................................
**13) पराशर से लिखित ग्रंथ का नाम क्या है?**
ज).........................................................
**14) ब्रह्मोत्सव के अंतिम दिन सुबह संपन्न करने वाली पुण्यस्नान को क्या कहते है?**
ज).........................................................
**15) तिरुमल, श्रीस्वामिपुष्करिणी के किनारे पर विराजित भगवान का नाम क्या है?**
ज).........................................................

## बिंदी को जोड़िए

## रंगों को भरिये क्या!

## निम्न लिखित को मिलाएँ!

| | |
|---|---|
| 1) श्री महाविष्णु | अ) त्रिशूल |
| 2) परमेश्वर | आ) गदा |
| 3) देवेंद्र | इ) यमपाश |
| 4) यमराज | ई) सुदर्शन चक्र |
| 5) हनुमान | उ) वज्रायुध |

1) ई 2) अ 3) उ 4) इ 5) आ

## श्री वेंकटेश्वर स्तोत्र

विना वेंकटेशं ननाथो ननाथः

सदा वेंकटेशं स्मरामि स्मरामि।

हरे वेंकटेश प्रसीद प्रसीद

प्रियं वेंकटेश प्रयच्छ प्रयच्छ।।

## चित्र में अंतर खोजे!

१) तोरण

२) लटका हुआ चिराग

३) किताब

४) स्याही वाली कलम

५) बालक के हाथ में कलम

६) तालपत्र

७) दीपं

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

# सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)

## चंदा भरने का पत्र

1. नाम : ........................................
(अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) ........................................
........................................
पिनकोड ..............................
मोबाइल नं ...........................

2. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-;
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा ☐ रु.1,030/-

4. चंदा का पुनरुद्धरण :
(अ) चंदा की संख्या :
(आ) भाषा :

5. शुल्क का विवरण :
धनादेश (BC's) / मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) /
भारतीय डाकघर (IPO) / ई.एम.ओ. (EMO) / :
दिनांक :

स्थान :
दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)

## धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने के लिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करें।

STD Code: 0877
**दूरभाष :**
2264359, 2264543.
**संपादक :** 2264360

**कॉल सेंटर नंबर :**
2233333, 2277777.

**मंत्र**
**ॐ नमो वेंकटेशाय**

Printed by Sri P. Ramaraju, M.A., and Published by Dr.K. Radha Ramana, M.A., M.Phil., Ph.D., on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

## तिरुमल तिरुपति देवस्थान

तिरुचानूर में स्थित श्री पद्मावती देवी मंदिर के आस्थान मंडप में दि.25.08.2023, शुक्रवार को अत्यंत वैभवोपेत ढंग से श्री वरलक्ष्मी व्रत को संपन्न किया गया। इस संदर्भ में स्वर्णरथोत्सव पर देवी माँ आरूढ़ होकर माडावीथियों में भक्तों को दर्शन दिया था। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष और ति.ति.दे. जे.ई.ओ. एवं अन्य उच्च पदाधिकारीगण ने भाग लिया।

## तिरुमल तिरुपति देवस्थान

दि.15.08.2023 को तिरुपति में स्थित ति.ति.दे. प्रशासनिक भवन के आँगण में स्वातंत्र दिवस का कार्यक्रम को संपन्न किया गया। झंडा को फहराते हुए ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री बी.करुणाकर रेड्डी जी। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. के ई.ओ. श्री ए.वी.धर्मरेड्डी, आई.डी.ई.एस., और अन्य उच्च पदाधिकारीगण ने भाग लिया। इस संदर्भ में सैनिकों का गौरव वंदन को स्वीकारते हुए दृश्य।

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthnams
Printing on 25-09-2023 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for
India under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2021-2023
"LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2021-2023"
Posting on 5th of every month.